जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
जैसलमेर

2015–16

क्रियात्मक अनुसंधान
(शोध सार)

सम्पादन

श्री महेश कुमार बिस्सा Msc.BEd.
व.व्याख्याता प्रभागाध्यक्ष IFIC

श्री बंशीधर पुरोहित Msc.MEd.
व्याख्याता सह प्रभारी IFIC

प्रकाशन

(आई.एफ.आई.सी.प्रभाग)
सेवारत कार्यक्रम,क्षेत्रीय अन्तः क्रियाएं शैक्षिक नवाचार एवं समन्वय प्रभाग
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,जैसलमेर फोन - 02992,252641

डर्फ से सम्बन्धित फोटो ग्राफ

डर्फ संगोष्ठी में जिले के तीनो ब्लॉक प्रा.शि.अ.एवं प्रभाग अधिकारी।

प्रधानाचार्य,उपप्रधानाचार्य,प्रभागाध्यक्ष IFIC एवं CMDE डर्फ कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए।

प्रधानाचार्य श्री बजरंग सिंह शेखावत द्वारा डर्फ संगोष्ठी में सम्बोधन

जिला शिक्षा अधिकारी प्रा.शि.श्री प्रतापसिंह काश्वा द्वारा संगोष्ठी में उदबोधन

उपप्रधानाचार्य श्री गजेन्द्र श्रीपत द्वारा कार्यशाला में उदबोधन

श्री बराईदीन सांवरा व व्याख्याता द्वारा कार्यशाला में सम्बोधन

संस्थान के शोध प्रभारी श्री बंशीधर पुरोहित द्वारा डर्फ में सबंध में प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए।

WE प्रभाग की प्रभागाध्यक्ष श्रीमती श्यामा आचार्य द्वारा अपने प्रभाग के शोध प्रतिवेदन की चर्चा करते हुए।

सौजन्य : राजेन्द्र व्यास (तकनीशियन)

झलकिंया (डर्फ) 2015-16

कार्यक्रम में अधिकारी गण

डर्फ संगोष्ठी कार्यक्रम में ब्लॉक प्रा.शि.अधिकारी जैसलमेर श्री उम्मेदसिंह भाटी उदबोधन देते हुए।

प्रशिक्षण में व्याख्याता श्री बंशीधर पुरोहित संभागीयों से क्रियात्मक शोध के बहुआयामी क्षेत्रों पर चर्चा करते हुए।

उपस्थित क्रियात्मक शोध-अनुसंधाता

कार्यगोष्ठी में शोध आकल्प बनाते हुए सम्भागीय।

डर्फ संगोष्ठी में तीनों ब्लॉक के शिक्षक-शिक्षिकाएं भाग लेते हुए।

सौजन्य :- कमाल खां
प्रयोग शाला सहायक

डर्फ (2015-16)

शोध कार्यगोष्ठी में चर्चा करते हुए डर्फ कार्यकारिणी एवं सलाह कार मण्डल में अधिकारी गण- डाईट जैसलमेर 2015-16

सौजन्य :- जीवनसिंह भाटी क.लि.

सेवामें

श्रीमान्.....

.....

.....

:: प्रेषक ::

प्रधानाचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान जैसलमेर

फोन न. 02992–252641

कीर्ति प्रिंटिंग हाउस जैसलमेर: 252501

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान जैसलमेर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय वस्तु	शोधकर्ता /नाम	पृष्ठ सं.
1	प्राक्कथन	श्री बजरंगसिंह शेखावत	1
2	सम्पादकीय	श्री महेश कुमार बिस्सा श्री बंशीधर पुरोहित	2
3	कार्यकारिणी	निर्देशानुसार	3
4	डर्फ एक सामान्य परिचय	श्रीमती आशा मीना	4
5	अनुसंधान हेतु समस्या का चयन कैसे ?	श्री पदमाराम ,श्री पूनमाराम	5–8
6	रा.वा.उ.प्रा.वि.चान्दन में कक्षा 8 उत्तीर्ण से पूर्व पढ़ाई छोड़ने की समस्या एवं उसका समाधान	श्रीमती प्रीति बिस्सा	9–10
7	रा.उ.प्रा.वि.खाभा(प.स.सम) में कक्षा–5 के विद्यार्थियों की उपस्थिति की अनियमिता	श्री उम्मेदसिंह	11–12
8	रा.उ.प्रा.वि.हडडा (प.स.जै.) मे कक्षा–6 के विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति अरूचि का अध्ययन	श्री राजेन्द्र कुमार बाना	13–15
9	रा.उ.प्रा.वि. सेरावा (प.स.सम) शिक्षण में पुस्तकालय की उपयोगिता	श्री तीर्थकुमार	16–18
10	रा.उ.प्रा.वि.जामडा(प.स.सम) में कक्षा–6 के विद्यार्थियों में समय से पूर्व पलायन समस्या एवं समाधान	श्री तैयब खान	19–20
11	रा.उ.प्रा.वि. दवाडा (प.स.सम) में प्राथमिक कक्षाओं में गृहकार्य की उपयोगिता	श्री सुगरसिंह मीना	21–23
12	रा.प्रा.वि.दरबारी का गांव(प.स.जै.)की के कक्षा–4 के विद्यार्थियों के गणित विषय के प्रति अरूचि की समस्या एवं समाधान	श्रीमती कुसुम	24–25
13	अ.श.रमणलाल मेघवाल रा.प्रा.वि.रामगढ ।।में कक्षा 5 के विद्यार्थियों के अंग्रेजी विषय के शब्दों के शुद्ध उच्चारण व लेखन	श्री रघुवीरदान चारण	26–27
14	जैसलमेर जिले के उच्च प्रा.वि. में विज्ञान किट का अधिकतम उपयोग (प्रभाग स्तरीय शोध)	श्री महेश कुमार बिस्सा श्री बंशीधर पुरोहित	28–31
15	रा.उ.प्रा.वि.काहला में इन्डोर गेम्स की जानकारी का अभाव समस्या व समाधान	श्री मुकेश कुमार व्यास	32–34
16	रा.उ.प्रा.वि.रिदवा में सीसीई की प्रभावशीलता का अध्ययन	श्री अमजद खां	35–36
17	रा.उ.प्रा.वि. कलरो की ढाणी में कक्षा 5 में अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि का अध्ययन	मंजुला	37–38
18	अल्प संख्यक बालिकाओं का प्राथमिक स्तर के बाद शिक्षा से पलायन	श्री कमलदान	39–41
19	रा.बा.उ.प्रा.वि. हमीरा में कक्षा 8 की छात्राओं की गणित में अरूचि	श्रीमती किस्मत कुमारी	42–43
20	रा.उ.प्रा.वि.मोती किलों की ढाणी की कक्षा 5 व 7 में हिन्दी वर्तनी सुधार सम्बंधी समस्या	श्री रणवीर	44–46
21	रा.प्रा.वि.नभे खां की ढाणी (पं.सं. सांकड़ा) में कक्षा 1 से 5 के विद्यार्थियों में अनियिमितता की समस्या।	श्री पप्पूराम	47–48
22	SIQE आधार रेखा मूल्यांकन भौतिक सत्यापन (प्रभागस्तरीय IFIC)2015–16	श्री महेश कुमार बिस्सा ,श्री बंशीधर पुरोहित श्री ईश्वरसिंह भाटी	49–57
23	शोध के प्रेरणादायक दोहे	श्रीमती श्यामा आचार्य	58
24	जिला शिक्षा अनुसंधाता वाकपीठ (डर्फ झलकिंया)	श्री कमाल खां, एवं जीवनसिंह भाटी	59–60
25			

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जैसलमेर

अनुसंधान

(डर्फ शोध सार संकलन पत्रिका)

सत्र् - 2015-16

संरक्षक
विनीता बोहरा (RAS)
निदेशक
SIERT उदयपुर

मार्गदर्शक
1. श्री बजरंगसिंह शेखावत
प्रधानाचार्य डाइट जैसलमेर

परामर्शक
श्री गजेन्द्र श्रीपत
उप प्रधानाचार्य

प्रकाशन एवं सम्पादक
1. श्री महेश कुमार बिस्सा (वरिष्ठ व्याख्याता)
प्रभागाध्यक्ष IFIC
2. श्री बंशीधर पुरोहित व्याख्याता
प्रभारी शोध IFIC

सहयोग

1. श्री नाथूराम गर्ग
प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि.
चांदन, जैसलमेर

2. डॉ. विमल कौर
प्रधानाध्यापिका
रा.उ.प्रा.वि. (बा)
लुहार वास, जैसलमेर

2. सुश्री मोनिका गोपा
अध्यापिका
रा.उ.प्रा.वि.
थैयात, जैसलमेर

प्रकाशक
आई.एफ.आई.सी. प्रभाग
डाइट जैसलमेर

-प्राक्कथन-

शोध क्रिया किसी भी समस्या के समाधान करने की वैज्ञानिक पद्धति है।इस कार्य में जुड़ने वाले व्यक्ति की सोच भी तदनुसार होती है।इस संस्थान के जिला शिक्षा एवं अनुसंधाता वॉकपीठ(डर्फ) द्वारा समय–समय पर अनेक विद्यालयी समस्याओं पर क्रियात्मक अनुसंधान करवाकर प्रतिवेदन प्राप्त किए जाते रहे है एवं उनके सुझावों से विद्यालयों के संस्था प्रधानों व शिक्षकों को अवगत कराया जाता रहा है ताकि विद्यालयों में समस्या समाधान के साथ शिक्षा के गुणात्मक स्तर में उत्तरोतर वृद्धि हो।जैसलमेर जिले के शिक्षक प्रायः अनुभव करते है कि यदि शिक्षा के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन अनुभूत की जाने वाली समस्याओं के सटीक समाधान उन्हें मिल जाए तो वे इस दिशा में निर्विन अग्रसर होते हुए विद्यार्थियों की सहायता करने में सक्षम हो पाएंगे। इस शोध पुस्तिका में शिक्षकों से प्राप्त प्रतिवेदनों का सार संक्षेप प्रकाशन करवाया जा रहा है। ताकि गुरूजन शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण निष्कर्षो का उपयोग कर सके। निश्चित रूप से यह पत्रिका एवं उसकी सामग्री शिक्षा कार्य से जुड़े व्यक्तियों की ज्ञान अभिवृद्धि व शैक्षिक उन्नयन में सहायक सिद्ध होगी।IFIC के प्रभागाध्यक्ष श्री महेश कुमार बिस्सा एवं शोध प्रभारी बंशीधर पुरोहित को पुस्तिका के सम्पादन हेतु बधाई देता हूँ इनके व्यक्तिशः प्रयासों से पुस्तिका उचित समय पर प्रकाशित हो सकी है।

इस पत्रिका के सम्पादन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सहयोग कर्ताओं को साधुवाद। साथ ही इस अंक को आप सभी सुधी पाठकों को समर्पित करते हुए गौरवान्वित अनुभव करता हूँ।

दिनांक : 12.2.2016

(बजरंग सिंह शेखावत)
प्रधानाचार्य DIET
जैसलमेर

सम्पादक की कलम से

अनुसंधान निरन्तर चलने वाला कार्यक्रम है। तथा शिक्षा जगत में अनुभव की जाने वाली समस्याओं तथा रोजमर्रा के कार्यो के अनुभूत समस्याओं को शोध के माध्यम से हल करने हेतु निरन्तर अनुसंधान होते रहना आवश्यक है। अनुसंधान के माध्यम से शिक्षा जगत की समस्याओं का आसनी से निवारण सम्भव है। तथा शिक्षा से जुड़े सभी व्यक्तियों को मार्गदर्शन मिलता है। शिक्षा जगत में शोध जैसे पुनीत कार्य में आहूति देने वाले शिक्षक शिक्षिकाओं एवं सहयोग कर्ता का तहेदिल आभार एवं अनुभवी शिक्षक राजेन्द्र कुमार बाना (रा.उ.प्रा.वि.हड्डा) तैयब खान रा.उ.प्रा.वि. (जामडा)प्रीति बिस्सा, रा.उ.प्रा.वि. (चान्दन), सुरेश कुमार प्रधानाध्यापक (रा.प्रा. विदरबारी गांव),उम्मेदसिंह उच्च प्राथमिक विद्यालय हड्डा का भी आभार, जिन्होंने समय–समय पर सहयोग देकर इस कार्य को पूर्ण करने में सहयोग दिया।

संस्थान के प्रधानाचार्य श्रीमान बजरंगसिंह शेखावत का शोध कार्य के प्रति लगाव प्रेरणा व सक्रिय मार्गदर्शन से यह प्रकाशन सम्भव होने के साथ पुस्तिका आप तक पहुंच सकी है। हम आपका आभार ज्ञापित करना चाहते है। सभी पाठकों जिज्ञासु शोधकर्ताओ एवं महानुभावों के सुझाव आंमत्रित है

महेश कुमार बिस्सा
वरिष्ठ व्याख्याता
प्रभागाध्यक्ष IFIC
डाईट जैसलमेर

बंशीधर पुरोहित (व्याख्याता)
सह प्रभारी
आई.एफ.आई.सी
डाईट जैसलमेर

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान ,जैसलमेर
सत्र् 2015-16
(सलाहकार मण्डल)

- संयोजक : श्री बजरंग सिंह शेखावत प्रधानाचार्य डाईट जैसलमेर
- सदस्य : श्री हरिप्रकाश डेन्डोर जि.शि.अ.माध्यमिक शिक्षा जैसलमेर
: श्री प्रतापसिंह कास्वां जि.शि.अ.प्रा.शि.जैसलमेर
: श्री गजेन्द्र श्रीपत उप प्रधानाचार्य डाईट जैसलमेर

(डर्फ कार्यकारणी)

अध्यक्ष- - श्री बजरंगसिंह शेखावत प्रधानाचार्य डाईट

सचिव- - श्री महेश कुमार बिस्सा वरिष्ठ व्याख्याता

- श्री बंशीधर पुरोहित व्याख्याता (शोध विशेषज्ञ मनोनित)

सदस्य- - श्री नाथूराम गर्ग प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. चांधन जैसलमेर
(माध्यमिक शिक्षा प्रतिनिधि)

- श्री राजेन्द्रसिंह भाटी शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी मा.शिक्षा

- श्री मनोहरलाल देवपाल अति.जि.शि.अ.प्रा.शि.जैसलमेर

- सुश्री मोनिका गोपा अध्यापिका रा.उ.प्रा.वि.ब्लॉक जैसलमेर प्रा.शि.(डर्फ प्रति.)

- डॉ. विमल प्रधानाध्यापिका रा.उ.प्रा.वि.बालिका लुहारवास जैसलमेर प्रा.शि.(डर्फ प्रति.)

डर्फ-एक सामान्य परिचय

श्रीमती आशा मीना
व्याख्याता एवं प्रभागाध्यक्ष ET

शैक्षिक शोध कार्य की महत्ता एवं क्षेत्र में इसकी उपादेयता को देखते हुए प्रत्ये जिले में जिला स्तर पर 'जिला शिक्षा अनुसंधाता वाक्पीठ' (Disteict Education Reseaech Forum) की स्थापना की गई।शिक्षा जगत में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु मार्ग प्रशस्त करने,शैक्षिक नवाचारों तथा विकास की नई दिशाओं का अवबोध एवं उनकी उपादेयता को सुस्पष्ट करने में इन अनुसंधान कार्यो का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।वाक्पीठ के कार्यो के व्यवस्थित संचालन का भार डाइट को सौंपा गया है,जिससे डर्फ–सदस्यों के माध्यम से चयनित शैक्षिक शोध योजनाओं पर कार्य करवाया जा सके।डर्फ के कार्यो का सुचारू रूप से नियमन एवं संचालन करने हेतु जिला स्तर पर 'सलाहकार एवं कार्यकारिणी मंडल गठित है।पूरे सत्र में डर्फ के कार्यो का चरणवार संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार हैः–

1. डर्फ के नवीन सदस्यों हेतु आवेदन पत्रों का आमंत्रण– 15 जुलाई तक अनुसंधान कार्यो हेतु योग्य एवं अनुभवी व्यक्ति उचित माध्यम से अपना आवेदन पत्र डाईट में भेज सकते है।
2. डर्फ सलाहकार मण्डल एवं डर्फ कार्यकारणी की सत्रारम्भ बैठक (जुलाई के अंतिम सप्ताह)में आयोजित कर वर्ष–भर के कार्यक्रमों की योजना पर पर्याप्त विचार विमर्श किया जाता है।
3. डर्फ एवं प्रभाग स्तरीय तीन दिवसीय सत्रारम्भ संगोष्ठी का आयोजन अगस्त माह में करवाया जाएगा, जिसमें नवीन सत्र के शोध कार्यो का चयन,आकल्प एवं उपकरण निर्माण का कार्य किया जाता है।
4. डर्फ एवं प्रभाग स्तरीय दो दिवसीय मध्यावधि संगोष्ठी–नवम्बर माह में आयोजित कर शोध कार्यो की प्रगति व अनुभूत कठिनाइयों पर चर्चा कर शेष कार्य हेतु भावी योजना बनाई जाती है।
5. डर्फ एवं प्रभाग स्तरीय तीन दिवसीय सत्रांत वाक्पीठ का आयोजन जनवरी में किया जाता है जिसमें किये गए कार्य का प्रतिवेदन सभी सदस्य प्रस्तुत कर आगामी सत्र की योजना पर विचार विमर्श करते है।
6. डर्फ एवं प्रभाग स्तरीय दो दिवसीय शोध सार लेखन कार्यगोष्ठी का आयोजन फरवरी माह में कर प्राप्त प्रतिवेदनों का शोध सार तैयार किया जाता है।
7. डर्फ एवं प्रभाग स्तरीय शोध सारांश प्रकाशन का कार्य आई.एफ.आई.सी.प्रभाग द्वारा मार्च में किया जाता है एवं कार्य का मूल्यांकन किया जाता है।

यदि आप भी शैक्षिक क्षेत्र में नवीन एवं सकारात्मक सोच रखते है तो डर्फ के सदस्य बनकर अपनी योजनाओं एवं विचारों को सम्बलन दे सकते है।

अनुसंधान हेतु समस्या का चयन कैसे ?

श्री पदमाराम
व्याख्याता एवं
सहप्रभारी (CMDE)

श्री पूनमाराम बालोच
व्याख्याता एवं प्रभागाध्यक्ष
(P&M)

समस्या क्या है:–

मानव या मानव समाज की अनेक आवश्यकताएं होती है ।तथा दिन प्रतिदिन इन आवश्यकताओं का रूप तथा गम्भीरता बदलती रहती है।इन आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये मावन या समाज अनेक साधनों का प्रयोग करता है।जब उपलब्ध साधनों के द्वारा आवश्यकताओं की संतुष्टि नही होती है तो यही स्थिति समस्या को जन्म देती है।

टाउन सेन्ड (Town Send) के अनुसार
''समस्या तो समाधान के लिये प्रस्वाति एक प्रश्न है''
''A problem is a question proposed for solution''

समस्या का चयन

अनुसंधान में सर्वप्रथम चरण शोध के लिये विषय,प्रकरण अथवा समस्या का चयन करने से संबंधित है।शिक्षा के क्षेत्र की व्यापकता,नित नवीन नवाचार व शैक्षिक जटिलताएं इस चयन को ओर दूभर बना देती है।वस्तुतः सही समस्या का चयन अपने आप में सबसें बड़ी समस्या है।इस समस्या के समाधान हेतु कुछ मार्ग दर्शक तत्व सुझाए जा रहें है।जो एक शोधार्थी को समस्या चयन में सहायता प्रदान कर सकेंगें।

(अ) समस्या चयन के सिद्धान्त : समस्या के चयन में शोधार्थी को अग्र लिखित स्थापित सिद्धान्तो को आवश्यक रूप से अपने ध्यान में रखना चाहिये।

1. **अनुसंधान कर्ता की सूची:** यदि कोई समस्या अनुसंधान कर्ता को नीरस प्रतीत होती है तो वह उस समस्या के साथ न्याय नही कर सकता अतः अनुसंधान कर्ता को उसी समस्या पर कार्य आरम्भ करना चाहिये।जिसमें उसकी विशेष रूचि हो ।उसकी रूचि के अनुकूल होने पर वह समस्या पर अच्छा कार्य कर सकेगा।

2. **समस्या नवीन होनी चाहिए :–** जिस समस्या पर पहले से कार्य हो चुका है उस पर पुनः कार्य करना समय और धन दोनों का अपव्यय माना जायेगा।अनुभवी तथा दक्ष अनुसंधान कर्ताओं को नवीन समस्या का ही चयन करना चाहिए।पूर्व में किए गए अनुसंधानों का चयल उसके निष्कर्षों की वैधता की जांच के लिए विशेष परिस्थितियों में किया जा सकता है।

3. **अनुसंधान कर्ता की योग्यता:–** समस्या अनुसंधान कर्ता की योग्यता को ध्यान में रख कर चुनी जानी चाहिए।यदि समस्या शोधार्थी की योग्यता के अनुरूप नहीं है तो कई बार कार्य बीच में ही छोड़ना पड़ता है।

4. **समस्या का महत्व:–** वही समस्या लेनी चाहिए जिसकी उपयोगिता हो ।यदि समस्या सैद्धान्तिक या व्यवाहारिक नहीं है तो ऐसी समस्या पर धन श्रम दोनों व्यर्थ सिद्ध होगें ।

5. **समस्या मापन की सीमा में हो :–** समस्या सदैव ऐसी लेनी चाहिये जिसमें माप व मूल्यांकन के लिये सभी उपकरण सरलता से उपलब्ध हों।

6. **आंकडों की उपलब्धता :–** समस्या ऐसी होनी चाहिए जिससे संबंधित आंकडे सरलता से उपलब्ध हो सकें।इसके साथ ही आंकडे एकत्रित करने के विश्वसनीय व वैध साधन होने चाहिए।

7. वित्तीय साधनों की व्यवस्था :– आज अनुसंधान कार्य अत्यन्त व्यय साध्य बन गया है। समस्या का चयन करते समय खर्च होने वाले व्यय का अनुमान लगा लेना चाहिए तथा यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए की अनुमानित वितीय व्यवस्थ सभंव हो सकेगी या नही।

8. निर्देशन की व्यवस्थाः– समस्या ऐसी लेनी चाहिए कि जिसके लिए अनुभवी व्यक्तियों की निर्देशन सहायता उपलब्ध हो सके। निर्देशन के अभाव में अनुसंधान कर्ता को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

समस्या शोध कर्ता के अनुकुल है या नही।

ब. समस्या का चयन करते समय ध्यातव्य बातें:–

चयन करते समय शोधार्थी यदि निम्नलिखित बातों को अपने ध्यान में रखेगा तो उसके काम,धन और समय का अधिकाधिक सदुपयोग होगा। इस हेतु शोध कर्ता को शैक्षिक साहित्य अध्ययन कर निम्न लिखित बातों का पता रखना चाहिए।

1. शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में कितना अनुसंधान कार्य हुआ है।
2. नवीन पद्धतियों/ प्रवृतियों का विश्लेषण
3. उपलब्ध आलोचनात्मक निबंध पत्र/पत्रिका तथा टिप्पणियां।
4. शिक्षा संबंधी भविष्यवाणियां।
5. अनुसंधान की आवश्यकता ।
6. अनुसंधान जिस पर कार्य हो रहा है।

स. समस्या के स्त्रोत :–

समस्या के चयन हेतु आवश्यक सिद्धातों तथा ध्यातव्य बातों के पश्चात बारी आती है समस्या के स्त्रोतों की। समस्या कहां से लाएं। समस्या कहां खोज ? इन प्रश्नों के उतर के लिये निम्नलिखित बिन्दु मददगार साबित हो सकते है:–

1. सन्दर्भ साहित्य अध्ययनः– समस्या को खोजने के लिए हमें साहित्य के अथाव सागर में उतरना होगा। अनुसंधान कर्ता ने जिन समस्या का चयन किया है। उस पर पूर्व में भी कार्य हुआ है,या नहीं, कितना कार्य हुआ है, क्या विष्कर्ष रहें है– इन सभी बातों का समाधान सन्दर्भ साहित्य के अध्ययन से प्राप्त हो सकता है। सन्दर्भ साहित्य हेतू विभिन्न पुस्तकाल्यों में उपलब्ध संदर्भ पुस्तको,सहायक पुस्तकों व अन्य सामग्री की सूची शोध कर्ता के पास उपलब्ध होनी चाहिए । पुस्तकों के अलावा निम्नलिखित सामग्री का अध्ययन करके भी शोध समस्या खोजी जा सकती है।

शोध पत्र–पत्रिकाएं :– कोई शोध पत्रिकाएं व जर्नल तात्कालिक अनुसंधान से संबंधित विवरण प्राप्त करने का सर्वोत्तम स्त्रोत होती है। शिक्षा से संबंधित तात्कालिक समस्या पर,इनमें अधिक प्रकाश डाला जाता है,इन पत्रिकाओं के अध्ययन से शिक्षा के क्षेत्र से संबंधित समस्याओं का पता चल सकता है।

शोध साराशं:– अनुसंधान अध्ययनों का सारांश भी कई संस्थाओं द्वारा प्रकाशित किया जाता है। उदाहरण : UNESCO द्वारा प्रकाशित EDUCATIONAL ABSTRACT समस्या चयन में अत्यन्त सहायक सिद्ध होते है।

शोध प्रबंध :–

विश्व विद्यालयों में छात्रों द्वारा जमा किये जाने वाले शोध प्रबंध तथा थिसिस के अध्ययन से भी शिक्षा के क्षेत्र में नवीन समस्याओं से परिचित होन में सहायता मिलती है।

2. कक्षा तथा विद्यालय में उत्पन्न होने वाली समस्याः– प्रत्येक कक्षा में छात्र अध्यापक अंतक्रिया कई समस्याओं को जन्म देती है। अध्यापक को शिक्षण के समय व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि अध्यापक अध्यापन के समय सचेत हरे तो उसको अनेक समस्या अपने ही क्षेत्र में उपलब्ध हो सकती है।

3. विशेषज्ञ सहायता :– अनुसंधान विशेषज्ञ सम्पर्क तथा परिचर्चा एवं गोष्ठिओं में विद्वानों के भाषण सुनने से भी अनुसंधान समस्या चयन में सहायता मिलती है। अनेक संगठन शिक्षा प्रणाली के सुधार में संलग्न है। इनके सम्पर्क में आने पर भी अनेक समस्याओं से परिचित होने मे सहायता मिल सकती है।

4. नवाचार :– वैज्ञानिक व प्राविधिक प्रगति के कारण समाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में कई नवाचार किये जा रहें सभी नवीन प्रयोगों का मूल्याकंन समस्या का एक अच्छा स्त्रोत है।

5. पूर्व में किए गये अनुसंधान की पुनरावृति :– यदि पूर्व में (1) सन्देहास्पद परिणाम प्राप्त हो । (2) अन्य न्यादर्श चयन कर्ता हो व (3) पूर्व के अध्ययान की वैद्यता सुनिश्चित करने हेतु प्रमाण उपलब्ध हो तो पूर्व में किया गया अनुसंधान दोहराया जा सकता है तथा समस्या का एक स्त्रोत बन सकता है।

अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण उपकरण :-

प्रश्नावली :–

प्रश्नावली शोध कार्य में आंकडे एकत्रित करने का महत्वपूर्ण उपकरण है। व्यक्तिओं से सूचना प्राप्त करने के लिऐ बनाए गये प्रश्नों की क्रमबद्ध सूचि को प्रश्नावली कहते है। प्रशनावली एक उपकरण है, जिसका शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वालों द्वारा वर्तमान परिस्थितियों एवं क्रियाओं के बारे में तथा अभिवृति व मत को जानने के लिए व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। प्रश्नावली को डाक द्वारा विभिन्न व्यक्तियों को भेजा जाता है व उनके अन्तर प्राप्त कर निष्कर्ष निर्धारण किया जाता है।

अ. प्रश्नावली के प्रकार :– प्रश्नों के प्रकार व प्रश्नावली के सरंचना के आधार पर प्रश्नावली निम्न प्रकार की होती है।

1. प्रतिबंधित प्रश्नावली (Closed Form):–

इसमें प्रश्नों के साथ–साथ उतर भी दिये होते है। उतरदाता को दिये हुए उत्तरों में से एक का चयन करना होता है। इस प्रकार की प्रश्नावली का लाभ यह है कि इसमें प्राप्त उत्तरो का वर्गीकरण करने में सुविधा रहती है।

2. अप्रतिबंधित प्रश्नावली (Open Questionnaire):– इस प्रकार की प्रश्नावली में उत्तरदाता को सोचने विचारने की पूर्ण स्वत्रन्ता होती है। इसमें प्रश्नों के साथ संभावित उत्तर नही दिये जाते है। गुणात्मक तथ्यों की जानकारी हेतु खुली प्रश्नावली अधिक उपयोगी है।

3. मिश्रित प्रश्नावली (Mixed Questionnaire):– इस प्रश्नावली में प्रतिबंधित व अप्रतिबंधित दोनों प्रकार के प्रश्न पाए जाते है।

4. चित्रमय प्रशनावली (Pictorial Questionnaire):– इस प्रकार की प्रश्नावली में निर्देशों के साथ चित्र दिये होते है तथा उत्तरदाता इन चित्रों पर चिन्ह लगाकर प्रश्नों के उत्तर देता है । ऐसी प्रश्नावली अशिक्षित, बच्चों तथा कम बुद्धि वालें व्यक्तियों से सूचना प्राप्त करने में उपयोगी रहती है।

5. संरचित प्रश्नावली (Structure Questionnaire):– इस प्रकार प्रश्नावली की रचना अनुसंधान आरम्भ करनेसे पहले कर ली जाती है और बाद में कोई परिर्वतन नही किया जाता है।

6. असंरक्षित प्रश्नावली (Non Structure Questionnaire):– इस प्रकार की प्रश्नावली में किसी प्रकार के प्रश्नों का निर्माण पहले से नही किया जाता है।इस में केवल उन विषय का उल्लेख होता है जिनके सबंध में उत्तरदाताओं से सूचना प्राप्त करनी है।

(बी.) प्रश्नावली का निर्माण :– अनुसंधान की सफलता में प्रश्नावली का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है । अतः प्रश्नावली के निर्माण में सावधानी सतर्कता आवश्यक है।इसके लिये निम्न बातें को ध्यान में रखना चाहिये।

1. समस्या के विभिन्न पक्षो का विश्लेषण :– सर्वप्रथम उद्देश्य को स्पष्ट रूप से लिखकर उसके विभिन्न अंगों की विस्तृत सूची तैयार करनी चाहिए।उसके बाद समस्या के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करना चाहिए ताकि उन पक्षों का तुलनात्मक महत्व स्पष्ट हो जाए।इसके आधार पर प्रश्नों का निर्माण करना चाहिए।
2. प्रश्नावली का प्रकार निश्चित कर लिया जाए।
3. प्रश्नावली का निर्माण निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।
   - प्रश्नों की भाषा सरल व स्पष्ट हो।
   - असमंजस पैदा करने वालें प्रश्न नही होने चाहिए।
   - प्रश्नों में भावात्मक शब्द, पारिभाषिक शब्द तथा बहुअर्थी शब्दों का प्रयोग नही करना चाहिए।
   - प्रश्नावली के प्रत्येक भाग के लिये निर्देश होने चाहिए।
   - प्रश्न लम्बें नही होने चाहिए।
   - प्रश्न उत्तेजित या उपमानित करने वाले नही होने चाहिए।
   - प्रश्नों की संख्या अधिक नही होनी चाहिए।
   - प्रशन संख्यिकीय विवेचन के योग्य होने चाहिए।
4. प्रश्नों का निर्माण करने के बाद सहयोगियों से प्रश्नावली की समीक्षा करवानी चाहिए।
5. प्रश्नावली का आकार न तो बहुत छोटा हो और ना ही बहुत बड़ा हो
6. प्रश्नावली का लेख,सुपाठ्य व सुन्दर हो।
7. प्रश्नावली के निर्देशों में उत्तरदाता के उत्तर गोपनीय रखने के स्पष्ट निर्देश अंकित हो।

(सी.) अच्छी प्रश्नावली की विशेषताएं:–

- प्रश्नावली में प्रश्नों की भाषा तथा शब्दावली बहुत की स्पष्ट होती है।
- प्रश्नावली में प्रश्नों का उत्तर स्वयं सूचनादाता को लिखना होता है।
- इसके द्वारा बिना सम्पर्क किए व्यक्तियों से सूचना प्राप्त की जा सकती है।
- अधिक विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए व्यक्तियों से इसके द्वारा सूचनाएं एकत्रित की जा सकती है।
- व्यक्ति पर्याप्त समय लेकर इसके उत्तर सोच समझकर दे सकता है।
- इनके द्वारा गुप्त व आंतरिक सूचनाओं को सरलता से प्राप्त कर लिया जाता है।
- यह कम खर्चीली व सरल साधन है।
- अच्छी प्रश्नावली विश्सनीय व वैध होती है।
- अच्छी प्रश्नावली के प्रश्न वस्तुनिष्ठ होते है।

लेखक

विषयः रा.बा.उ.प्रा. वि. चांदन पंचायत समिति जैसलमेर की बालिकाओं द्वारा कक्षा 8 वीं उर्तीण से पूर्व बीच में पढाई छोड़ने की समस्या एवं उसका समाधान

प्रस्तोता– श्रीमती प्रीति बिस्सा
रा.बा.उ.प्रा.वि.चांदन पं.स. जैसलमेर

शोध सार

–

शोध औचित्य–
(1) बालिकाओं के अधूरी पढाई छोड़ने के कारणों का पता लगाना।
(2) शिक्षा के प्रति बालिकाओं में अरूचि का पता लगाना।
(3) बालिकाओं के कम ठहराव की समस्या का पता लगाना।

उदेश्य–
प्राथमिक कक्षाओं तक बालिकाएं नियमित रहती है लेकिन उच्च प्राथमिक कक्षाओं तक आते–आते वे ड्राप आऊट होने के साथ एवं शिक्षा का स्तर गिरता है। बालिका शिक्षा बाधित होती है तथा भावी पीढ़ियों की भी शिक्षा योजना बाधित होती है। अतः बालिकाओं में उच्च शिक्षा के प्रति रूचि जागृत करना। बीच में पढ़ाई छोड़ने के कारणों का पता लगाना इस क्रियात्मक शोध का उदेश्य है।

समस्या कथन–
राजकीय बा.उ.प्रां.वि.चांदन पं.सं. जै. की बालिकाओं द्वारा कक्षा 8 वीं उर्तीण से पूर्व बीच में पढाई छोड़ने की समस्या एवं उसका समाधान

समस्या कारण–
(1) बालिकाओं पर शिक्षणकार्य के अलावा घरेलू कार्यो की अधिकता।
(2) किशोरवयः बालिकाओं के अभिभावकों में उनके प्रति असुरक्षा की भावना।
(3) छात्राओं द्वारा अपने छोटें बहिनों–भाईयों री देखभाल के कारण विद्यालय आने का समय न निकाल पाना।

परिकल्पना–
(1) बालिका शिक्षा को बढावा मिलेगा बालिकाओं में उच्च शिक्षा के प्रति रूचि जागृत होगी।
(2) अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आयेगा।
(3) बालिकाओं के ठहराव की स्थिति सुनिश्चित होगी।

शोध परिसीय–
रा.बा.उ.प्रा.वि.चांदन पं.स. जै. की बालिकाओं (कक्षा– 6 से 8)

न्यायदर्श– विद्यालय की कक्षा 6 से 3 कक्षा 7 –की 5 व कक्षा 8 री 6 अध्ययनरत बालिकाऐं।

उपकरण– प्रस्तुत क्रियात्मक शोध को पूर्ण करने के लिऐ स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर प्रशासित किया गया व साक्षात्कार प्रविधि को अपनाया गया।

सांख्यिकी एवं तकनीक– शोध हेतु दत्त् विश्लेषण कार्य में औसत प्रतिशतता साख्यिकी प्रविध का प्रयोग किया गया।

दत्त संकलन एवं व्याख्या–
प्रयुक्त प्रश्नावली व साक्षात्कार से प्राप्त आकड़ों के आधार पर तथ्य सामने आये विद्यालय के 14 बालिकाओं, 14 अभिभावकों, प्रधानाध्यापक सहित दो शिक्षकों से प्रश्न पूछे गये।

विश्लेषण–

(1) संस्था प्रधान ने बताया कि कक्षा 5 के बाद विद्यालय की बालिकाऐं अनियमित रूप से आती है। और व आठवीं कक्षा तक आते–आते बिलकुल ही आना बंद कर देती है। इसके व्यापक कारण निम्न है।

(2) 70% अभिभावकों का मानना है कि बालिकाओं से घरेलू कार्य करवाया जाता है।

(3) 50% महिला अभिभावकों ने बताया की बालिकाऐं अपने छोटे भाई बहिनों को संभालने व घरेलू कार्यो में मेरा सहयोग करने के कारण विद्यालय नहीं जा पाती।

(4) शिक्षिकाओं ने बताया कि बालिकाऐं कक्षा में अनियमितता, गृहकार्य पूरा न करना आदि कारणों से 60: बालिकाऐं पढाई में पिछड़ जाती है व हीन भावना आ जाने से विद्यालय छोड़ देती है।

(5) 50% बालिकाओं ने बताया कि उन्हे घर पर रहना ही अच्छा लगता है क्योंकि उनकों पढाई से ज्यादा घरेलू कार्यो में सहयोग अच्छा लगता है।

(6) 50% अभिभावकों ने बताया कि उनके कहने के उपरांत भी विद्यालय नहीं जाती है। घर के अन्य कार्यो में रूचि लेती है।

निष्कर्ष–

अभिभावक प्रश्नावली व शिक्षार्थी प्रश्नावली साक्षात्कार के माध्यम से उनके उतरों का विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष निकाले गये।

(1) अधिकाश बालिकाऐं माता–पिता के साथ घरेलू में सहयोग देती हैं

(2) अभिभावक असाक्षर होने के कारण बालिकाओं की पढाई पर ध्यान नहीं दे पाते है।

(3) बालिकाऐं घर पर छोटे बच्चों का ध्यान रखती है इसलिए वे नियमित विद्यालय नहीं आते है;

(4) महिला अभिभावकों की शिक्षण के प्रति उदासीनता बालिकाओं की पढाई बीच में छोड़ने का मुख्य कारण है।

(5) ग्रामीण क्षेत्र में होने के कारण लिंग भेदभाव भी एक कारण है बालिका शिक्षा के प्रति गंभीर नहीं है।

शिक्षकों को पर्याप्त मात्रा में नहीं होना ।

सुझाव–

(1) लिंग भेदभाव की समस्या का अंत आवश्यक है जिससे बालिकाओं में भी शिक्षण में रूचि बढेगी।

(2) बालिकाओं के अभिभावकों से सम्पर्क कर उनको शिक्षण के महत्व को समझाया जाये।

(3) शिक्षक अभिभावक परिषद की नियमित बैढकें करते हुऐ उक्त समस्या का समाधान किया जाये।

(4) विद्यालय का माहौल आनंददायी व रूचि के अनुसार हस्तशिल्प, हस्त निर्मित गतिविधियों का आयोजन किया जाये।

(5) शिक्षिकाओं द्वारा बालिकाओं तथा उनके अभिभावकों को समय समय पर सम्पर्क कर शिक्षा के प्रति रूचि जागृत की जाये।

उपयोगिता–

(1) कक्षा 6 से 8 तक अनियमितत व ड्राप आऊट की समस्या एवं उसका समाधान विषय पर अनुसंधान किया गया जो मेरे विद्यालय की कक्षा 6 से 8 तक की बालिकायों के लिऐ उपयोगी है इसके माध्यम से विद्यार्थियों की अनियमितता की समस्या का पता लगाया गया एवं उसका समाधान किया जावेगा।

यह क्रियात्मक अनुसंधान ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं अन्य विद्यालयों,विद्यार्थियों व शिक्षविदों के लिऐं उपयोगी होगा। इस अनुसंधान से अभिभावकों की लैंगिक भेदभाव व बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आयेगा।

अंत में मेरे द्वारा किया गया यह क्रियात्मक शोध अनुसंधान अंतिम परिणाम नहीं है अन्य अनुसंधान कर्ताओं के लिऐ आगे उपयोगी हो सकेगा।

अनुसंधाता

विषयः–रा.उ.प्रा.वि. खाभा पंचायत समिति सम में कक्षा 5 के विद्यार्थियों में उपस्थिति की अनियमितता की समस्या एवं उसका समाधान

प्रस्तोता
उम्मेदसिंह अध्यापक रा.उ.प्रा.वि.खाभा पं.सं सम

शोध सार –

शोधओचित्य

(1) कक्षा 5 के विद्यार्थियों की अनुपस्थिति का पता लगाना।
(2) विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अरूचि का पता लगाना।
(3) कक्षा 5 के विद्यार्थियों में उपस्थिति की निरंतरता न होने का पता लगाना।

उदेश्य–

कक्षा में विद्यार्थियों की अनियमितता से शिक्षण व्यवस्था प्रभावित होती है तथा शैक्षणिक स्तर गिरता है। विद्यार्थी पढाई में रूचि नहीं लेते है। शिक्षण में रूचि जागृत करना तथा नियमित ठहराव सुनिश्चित करना शोध का उदेश्य है।

समस्या कथन–

रा.उ.प्रा.वि. खाभा पं. स. सम में कक्षा 5 में विद्यार्थियों की अनियमितता की समस्या पर शोध एवं समाधान पर मंथन करना।

समस्या कारण–

(1) अभिभावकों का शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा तथा उनका कृषि एवं पशुपालन कार्यों में व्यस्त रहना।
(2) विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति अरूचि।
(3) विद्यार्थियों का शिक्षण के अतिरिक्त अन्य घरेलू कार्यों में लगे होना।
(4) विद्यालय में शिक्षकों की कमी होना।

परिकल्पना–

विद्यार्थी नियमित रूप से विद्यालय पहुंचेंगे। कक्षाऐं नियमित होगी जिससे शिक्षा के स्तर में गुणात्मक रूप से वृद्धि होगी तथा शतप्रतिशत नामांकन एवं ठहराव का लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

शोध परिसीमा–

रा.उ.प्रा.वि.खाभा पं.स.सम का विद्यालय क्षेत्र।

न्यायदर्श–

विद्यालय की कक्षा 5 के 12 विद्यार्थी 5 बालक तथा 7 बालिकाऐं।

उपकरण–

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध को पूर्ण करने के लिऐं स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर प्रशासित किया गया व साक्षात्कार प्रविधि को अपनाया गया।

साख्यिकी एवं तकनीक–

शोध हेतु दत्त विश्लेषण कार्य में औसत प्रतिशतता सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया।

दत्त संकलन एवं व्याख्या–

प्रयुक्त प्रश्नावली व साक्षात्कार से प्राप्त आकड़ों के आधार पर तथ्य सामने आये। विद्यालय के 12 विद्यार्थियों 12 अभिभावकों प्रधानाध्यापक व तीन शिक्षकों से प्रश्न पूछे गये।

विश्लेषण–

संस्थाप्रधान ने बताया कि कक्षा 5 के विद्यार्थी अनियमित आते है उन्होने इसके व्यापक कारण बताये तदनुसार–

(1) 70% अभिभावकों का अप्रत्यक्ष मानना है कि विद्यार्थियों से घर पर घरेलू कार्य लिया जाता है;

(2) 50% महिला अभिभावकों ने बताया कि बालिकाऐं छोटे भाई बहनों को संभालती है जिससे वे विद्यालय नहीं जा पाती।

(3) 50% शिक्षकों ने बताया कि बालक बालिकाऐं घरेलू कार्य के कारण कक्षा में अनियमित रहती है।

(4) 80% विद्यार्थियों ने बताया कि पाठ्य पुस्तक का स्तर उनकी कक्षा के स्तर से ऊंचा है।

(5) अभिभावकों ने विद्यालय में सह शैक्षिक गतिविधियों के ओर प्रभावी संचालन की आवश्यकता है।

(6) 50% शिक्षकों ने शिक्षण में सहायक सामग्री प्रयोग को कम बताया।

(7) संस्था प्रधान ने बताया कि मि.डे मिल नियमित गुणवतापूर्ण बनाया जाता है।

(8) अभिभावकों ने विद्यार्थियों के गृहकार्य की नियमित जांच की अपैक्षा की है।

(9) 80% विद्यार्थियों ने बताया कि नियमित गृहकार्य दिया जाता है।

निष्कर्ष–

विद्यालय में विद्यार्थियों की अनियमितता के कारण शिक्षण प्रक्रिया बाधित होती है तथा कक्षा शिक्षण रूचि पूर्ण नहीं हो पाता अतः प्रधानाध्यापक प्रश्नावली अभिभावक प्रश्नावली एवं विद्यार्थी प्रश्नावली द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से उनके उत्तरों का विश्लेषण किया गया जिसका निष्कर्ष निम्नानुसार है–

(1) विद्यार्थी शिक्षण से अलावा घरेलू कार्यो में लगे होने के कारण विद्यालय नहीं पहुंचते है।

(2) अभिभावक असाक्षर होने के कारण विद्यार्थियों की विद्यालय में अनियमितता रहती है।

(3) विद्यार्थी गांव री ढाणियों में रहने के कारण उनकी नियमितता में बाधक है।

(4) बालिकाऐं घर पर छोटे बच्चों का ध्यान रखती है इसलिऐं वे नियमित विद्यालय नहीं आते है।

(5) अभिभावकों की शिक्षण के प्रति उदासीनता विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति का कभी भी विद्यार्थियों की अनियमितता उपस्थिति का एक कारण हे।

(6) विद्यालय में शिक्षकों की कमी भी विद्यार्थियों की अनियमितता के कारणों में सहायक है।

शोध सुझाव–

(1) विद्याार्थियों को घरेलू कार्यो से मुक्त रखा जायें।

(2) अभिभावकों को विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति की ओर ध्यान देना चाहिये।

(3) गांव से बाहर की ढाणियों तक आवागमन के साधनों की उपलब्धता अपेक्षित है।

(4) विद्यालय में रचनात्मक गतिविधियों को और अधिक प्रात्साहित किया जाये।

(5) विद्यालय में शिक्षकों के रिक्त पदों को पूर्ण भरा जाये।

(6) घर में शैक्षणिक माहौल बनाते हुऐं शिक्षण के प्रति विद्यार्थियों की रूचि जागृत की जाये।

(7) शिक्षक अभिभावक परिषद की नियमित बैठकें करते हुऐं उक्त समस्या का समाधान किया जाये।

शोध उपयोगिता–

(1) कक्षा 5 में विद्यार्थियों की अनियमितता की समस्या एवं उसका समाधान,विषय पर क्रियात्मक अनुसंधान किया गया जो मेरे विद्यालय की कक्षा 5 के लिऐं उपयोगी है तथा इसके माध्यम से विद्यार्थियों की अनियमितता की समस्या का पता लगाया गया एवं उसका समाधान हुआ।क्रियात्मक अनुसंधान अन्य विद्यालयों, विद्यार्थियों, शिक्षकों, एवं शिक्षाविदों के लिऐ उपयोगी होगा।अंत में मेरे द्वारा किया गया क्रियात्मक अनुसंधान के परिणाम अंतिम नहीं है।अन्य अनुसंधान कर्ताओं के लिऐं आगे अनुसंधान कार्य किया जा सकता है।

अनुसंधाता

विषयः–रा.उ.प्रा.वि. हड्डा पंचायत समिति जैसलमेर में कक्षा 6के विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति अरूचि का अध्ययन करना।

शोध सार (2015–16)

प्रस्तोताः

राजेन्द्र कुमार बाना

अध्यापक

रा.उ.प्रा.वि.हड्डा पं.स.जैसलमेर

शोधऔचित्य

(1) विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति अरूचि के कारणों का पता लगाना।

(2) विद्यार्थियों में विज्ञान विषय में प्रयोग द्वारा रूचि उत्पन्न करना।

उद्देश्य–

(1) विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति रूचि वलगाव उत्पन्न करना।

(2) शिक्षण में विद्यार्थी सहभागिता को बढ़ावा देना।

समस्या के कथन–

रा.उ.प्रा.वि. हड्डा पं.स. जैसलमेर के कक्षा 6 के विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति अरूचि का अध्ययन करना।

समस्या के कारण–

(1) विद्यार्थियों में सत्यता की जाँच करने के प्रति अरूचि तथा प्रयोग करने की लालसा जाग्रत नहीं है।

(2) अभिभावकों का शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा होना तथा आजीविका के कार्यो में व्यस्त रहना।

(3) विद्यार्थियों में पाठ्य पुस्तकों के सामान्य अध्ययन व प्रयोग करने की प्रवृति में कमी।

परिकल्पना–

(1) विद्यालयों में विज्ञान विषय के प्रति लगाव व जुड़ाव रख सकेगें।

(2) विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति रूचि जागृत हो सकेगी।

(3) विद्यार्थियों में प्रयोग करने की रूचि जागृत हो सकेगी।

शोध का परिसीमन–

प्रस्तुत लघु शोध जैसलमेर जिले के ब्लॉक जैसलमेर के रा.उ.प्रा.वि.हड्डा के विद्यार्थियों (कक्षा–6) अभिभावकों शिक्षकों व प्रधानाध्यापक तक सीमित रखा गया है।किन्तु यह शोध जैसलमेर एवम जिले से बाहर के विद्यालय एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी होगा।

न्यादर्श–

रा.उ.प्रा.वि. हड्डा के कक्षा–6 के दस (10) विद्यार्थी 6 बालक व 4 बालिका।

उपकरण–

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध को पूर्ण करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर प्रशासित किया गया व साक्षात्कार प्रविधि को अपनाया गया।

सांख्यिकी व तकनीक–

शोध हेतु दत विश्लेषण कार्य में औसत प्रतिशतता सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया।

दत्तसंकलन एवं व्याख्या–

प्रयुक्त प्रश्नावली व साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ो का संकलन किया गया। इसमें विद्यालय के 10 विद्यार्थी 10 अभिभावक व प्रधानाध्यापक सहित दो शिक्षकों से प्रश्न पूछे गए।

प्रस्तावना–

वर्तमान युग को विज्ञान का युग कहते ह। इस युग में विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र का विकास हुआ है। विद्यालय स्तर पर विज्ञान एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। इस विषय में सत्य एवं जाँचा परखा ज्ञान शामिल किया जाता हैं । सामान्यतया यह देखा जाता है कि शिक्षक व विद्यार्थी विज्ञान शिक्षा के प्रति आस्थावान नहीं है। विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति अरूचि है। प्रयोगकर्त्ताओं में बढ़ती अरूचि रस्म के रूप में प्रयोगों का सम्पादन साधनों उपकरणों ,व कार्यशैली का अभाव एवं सुविधाओं की कमी विद्यार्थियों को उनका उद्देश्य भूला सकते है। अतः आम धारणा है कि विज्ञान विषय कठिन है परन्तु शिक्षक को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि शिक्षण सहायक सामग्री व प्रयोग द्वारा विद्यार्थी शारीरिक एवं मानसिक रूप से सक्रिय रहते है। जिससे शिक्षण आनन्ददायी बनाया जा सकता है।

विश्लेषण–

(1) 60% विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें विज्ञान पढ़ना रूचिकर लगता है।

(2) 30% अभिभावकों ने बताया कि वे नियमित गृहकार्य देखते है।

(3) संस्थाप्रधान ने बताया कि वे अनियमित विद्यार्थियों के अभिभावकों से चर्चा करते है।

(4) 70% अभिभावकों का मानना है कि विद्यार्थियों से घरेलू कार्य करवाया जाता है।

(5) 50% विद्यार्थियों ने बताया कि वे गृहकार्य नियमित करते है।

(6) 30% विद्यार्थियों ने बतया कि शिक्षण के दौरान विषय वस्तु को अपने से जोड़ते है।

(7) 70% विद्यार्थियों को प्रतियोगिताएं जैसे पर्यावरण प्रदूषण,वन्य जीव संरक्षण इत्यादि में भाग लेना अच्छा लगता है।

(8) 50% अभिभावक विद्यालय में आकर विद्यार्थियों की प्रगति को देखते है।

निष्कर्ष –

रा.उ.प्रा.वि. हड़डा में पं.स. जैसलमेर में विद्यार्थियों अभिभावकों तथा शिक्षकों से प्राप्त प्रश्नावली पत्रकों के विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।

(1) विज्ञान हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है।

(2) विद्यार्थियों विषयाध्यापकों तथा संस्था प्रधान के अनुसार विज्ञान शिक्षण में शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग उचित है

(3) घर पर शैक्षिक माहौल का होना आवश्यक है।

(4) विद्यालयों में प्रयोगशाला व प्रयोगों से सम्बन्धित उपकरणों का अभाव है।

(5) विद्यालयों में विज्ञान क्लब की स्थापना नहीं है। इस कारण विज्ञान से सम्बन्धित गतिविधियाँ (विज्ञान क्विज, विज्ञान मेला विज्ञान प्रदर्शनी) नहीं हो पाती है।

सुझाव–

(1) उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अलग से प्रयोग शलाओं का निर्माण व प्रायोगिक सामग्री उपलब्ध करवाई जानी चाहिए।

(2) विज्ञान प्रयोगशालाओं में भ्रमण की व्यवस्था हो।

(3) विज्ञान शिक्षकों के लिए नवाचारों से सम्बन्धित प्रशिक्षण होने चाहिए।

(4) विज्ञान से सम्बन्धित प्रतियोगिताएं ज्यादा से ज्यादा होनी चाहिए।

(5) आशुचरित उपकरणों का निर्माण शिक्षण में उपयोग होना चाहिए।

(6) शिक्षण में शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग व प्रदर्शन किया जाना चाहिए।

(7) वनस्पति विज्ञान से सम्बन्धित अध्ययन में क्षेत्र विशेष का भ्रमण का प्रावधान होना चाहिए।

उपयोगिता –

विज्ञान विषय के प्रति अरूचि का अध्ययन शोध द्वारा किया गया है। विज्ञान विषय को रूचिक रव प्रभावी किस प्रकार बनाया जए। जिससे विद्यार्थियों को विषय–वस्तु समझ आ जाए और वो इसमें रूचि ले जिससे ज्ञान स्थायी हो उसके लिए शोध की उपयोगिता निम्न बिन्दुओं में उपयोगिता है।

(1) विद्यार्थियों को विज्ञान से जोड़कर विज्ञान के प्रति रूचि उत्पन्न की जा सकेगी।

(2) विज्ञान की दैनिक जीवन में उपयोगिता समझेंगे।

(3) विद्यार्थियों में स्वयं करके सीखने के गुणों का विकास होगा।

(4) विद्यार्थी विज्ञान से सम्बन्धित कई रहस्यों को जान सकेंगे।

(5) शिक्षक को पर्यावरण में उपलब्ध सामग्री का उपयोग विज्ञान शिक्षण को रूचिकर बनाने में कर सकेंगे।

(6) विज्ञान से सम्बन्धित कई प्रतियोगिताओं के प्रति रूचि जाग्रत की जा सकेगी।

(7) आशुचरित उपकरण बनवाए जा सकते है।

(8) विज्ञान शिक्षण को प्रभावी व रूचिकर बनाने में शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग तथा स्वयं प्रदर्शन द्वारा उपयोग किया जा सकता है।

अनुसंधाता

विषयः–रा.उ.प्रा.विद्यालय सेरावा (सोनू) पंचायत समिति–सम में कक्षा– VII के शिक्षण में पुस्तकालय की उपयोगिता

'प्रस्तोताः
तीर्थ कुमार (अध्यापक)
रा.उ.प्रा.वि.सेरावा (सोनू)
पं.स.सम

शोध औचित्य
(1)विद्यार्थियों में पुस्तकालय के प्रति रूचि जाग्रत करना।
(2) विद्यार्थियों में पुस्तकों की उपयोगिता की समझ विकसित करना।

उद्देश्य–
(1)विद्यार्थियों में पुस्तकालय के प्रति रूचि व लगाव उत्पन्न करना।
(2) विद्यार्थियों में पुस्तकों के पढ़ने में रूचि उत्पन्न करना।

समस्या कथन–
विद्यार्थियों में पुस्तकों के सामान्य अध्ययन की प्रवृति में कमी पर शोध व मंथन करना।

समस्या का कारण–
कक्षा शिक्षण,लिखित कार्य जाँच व उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच के अनुभवों के आधार पर विद्यार्थियों में शिक्षण में गम्भीरता में अभाव के सम्भावित कारण निम्न हैः–
(1) विद्यार्थियों में स्वाध्याय के प्रति रूचि का अभाव।
(2) विद्यार्थियों में पुस्तकालय के उपयोग में कमी
(3) विद्यार्थियों द्वारा ज्ञानवर्धक पुस्तकों के अलावा मंनोरंजन सम्बन्धी पुस्तकों में ज्यादा रूचि लेगा।

परिकल्पना–
(1)विद्यार्थियों को पुस्तकालय के उपयोग द्वारा स्वाध्याय की दिशा में प्रोत्साहित किया जाए तो वे शीघ्रता से सीखने को प्रवृत होगें।

शोध का परिसीमन–
रा.उ.प्रा.वि. सेरावा (सोनू) पं.स. सम ब्लॉक सम का विद्यालय परिक्षेत्र।

न्यादर्श–
रा.उ.प्रा.वि. सेरावा (सोनू) के कक्षा–7 के 10विद्यार्थी (6बालक 4 बालिका।)

उपकरण–
प्रस्तुत क्रियात्मक शोध को पूर्ण करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर प्रशासित किया गया व साक्षात्कार प्रविधि को अपनाया गया।

सांख्यिकी व तकनीक–
शोध हेतु दत्त विश्लेषण कार्य मेंऔसत प्रतिशतता सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया।

दत्त संकलन एवं व्याख्या–

प्रयुक्त प्रश्नावली व साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ो का संकलन किया गया। इसमें विद्यालय के 10 विद्यार्थी 10 अभिभावक व प्रधानाध्यापक सहित दो शिक्षकों से प्रश्न पूछे गए।

प्रस्तावना–

विद्यार्थियों में पुस्तकों के पढ़ने के प्रति उत्साह का संचार किया जा सकता है। पुस्तकालय उत्साह का संचार करने में महत्वूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके साथ ही प्रार्थना सभा में समाचार पत्रों का वाचन एवं प्रेरक प्रसंग को भी विद्यार्थियों के माध्ययम से ही सुनवाया जाए तो इससे भी अध्ययन के प्रति एक सकारात्मक माहौल बन सकेला। अंततः वे स्वाध्याय हेतु प्रेरित होगे।

विश्लेषण–

(1) 50% विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ना रूचिकर लगता है।
(2) 90% विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें मनोरंजन की पुस्तकें पढ़ना रूचिकर लगता है।
(3) संस्था प्रधान ने बताया कि वो विद्यार्थियों के अभिभावकों से पुस्तकालय की पुस्तकों के पढ़ने के बारें में पूछते है।
(4) 70% अभिभावकों का मानना है विद्यार्थियों से घरेलू कार्य करवाए जाने के कारण पढ़ने में अरूचि होती है।
(5) 30% विद्यार्थियों ने बताया कि वो घर पर पुस्तकालय की पुस्तकों का अध्ययन करते है।
(6) 100%संस्था प्रधान ने बताया कि विद्यार्थियों को समय–समय पर पुस्तकें प्रदान की जाती है।
(7) पुस्तकालय प्रभारी ने बताया कि 30%विद्यार्थी पुस्तकें प्राप्त करने के पश्चात बिना पढ़े ही वापिस करवा देते है।

निष्कर्ष –

रा.उ.प्रा.वि. सेरावा (सोनू) पं.स.सम में विद्यार्थियों अभिभावकों तथा शिक्षकों से प्राप्त प्रश्नावली पत्रकों के विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।

(1) अभिभावक निरक्षर होने के कारण वे अपने बच्चों का निरीक्षण अच्छी प्रकार से नहीं कर पाते है।
(2) विद्यार्थी घरेलू कार्य में व्यस्त रहने के कारण पुस्तकों का अध्ययन नहीं कर पात है।
(3) जब तक विद्यार्थियों को अन्य माध्यमों (यथा पासबुक व कुंजी)से उत्तर प्राप्त होते रहेगें तब तक उनरी रूचि पाठ्य पुस्तकों के स्वाध्याय व उनसे उत्तर प्राप्त करने में नहीं रहेगी।
(4) समाचार पत्र वाचन व प्रेरक प्रसंगो के माध्यम से भी विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ाई जा सकती है।
(5) स्वाध्याय में रूचि जाग्रत करने हेतु बाल सुलभ कहानियों की पुस्तकों से भी शुरूआत की जा सकती है।
(6) विद्यार्थियों की उपस्थिति अपेक्षानुसार नहीं होने के कारण वे पुस्तकालय की पुस्तकां को पढ़ने से वंचित रह जात है।
(7) पुस्तकालय में ज्यादातर पुस्तकें पुराने समय की होने के कारण विद्यार्थी उनमें रूचि ले पाते है।

सुझाव–

(1) संस्था प्रधान को अभिभावक अध्यापक मीटिंग में अभिभावकों को घर पर विद्यार्थी को पढ़ने के लिए प्रेरित करने के लिए कहा जाए।
(2) संस्था प्रधान द्वारा नई–नई बाल सुलभ पुस्तकों का पुस्तकालय में संकलन करना चाहिए।
(3) अभिभावकों शिक्षकों व प्रधानाध्यापक को बच्चों से पुस्तकालय की पुस्तकों की अध्ययन के बाद उनसे विचार–विमर्श करना चाहिए।
(4) प्रत्येक विद्यालय में पुस्तकालय की स्थापना की जानी चाहिए।
(5) पुस्तकालय में विद्यार्थियों की आयुवर्ग के अनुसार पुस्तकें उपलब्ध करवाई जानी चाहिए।
(6) छोटे बच्चों के लिए रंगीन चित्रों से परिपूर्ण किताबें अधिक उपयोगी और आकर्षक होती है।

(7) प्रत्येक विद्यालय में समाचार पत्र वाचन व प्रेरक प्रसंगो को विद्यार्थियों द्वारा सुनवाई जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।
(8) विद्यालय के समय विभाग चक्र में पुस्तकालय हेतु नियमित कालांश की व्यवस्था की जानी चाहिए।

उपयोगिता–

उपर्युक्त शोध से स्पष्ट है कि पुस्तकों एवं शिक्षक–शिक्षार्थी का अटूट नाता है। अतः शिक्षार्थी को अपने विषय एवं सामान्य जागरूकता हेतु पुस्तकों समाचार पत्रों व पत्रिकाओं पर निर्भर रहना चाहिए न कि अन्य सामग्रियों पर
(1) विद्यार्थी यदि स्वयं पढ़कर विषय–वस्तु समझ पाता है और प्रश्नों के उत्तरों तक स्वाध्यान के माध्यम से पहूँच पाता है तो यही इस शिक्षा प्रणाली से होने वाला लाभ है।
(2) स्वाध्याय से विद्यार्थियों को स्वयं सीखने के गुणों का विकास होगा।
(3) विद्यार्थी का शिक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना परीक्षा परिणाम में गुणात्मक उन्नयन का परिचायक है।
(4) यह क्रियात्मक अनुसंधान अन्य विद्यालय,विद्यार्थियों शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के लिए उपयोगी साबित होगा। अतं में मेरे द्वारा किया गया क्रियात्मक अनुसंधान का परिणाम अंतिम नहीं है तथा अन्य अनुसंधान कर्ताओं के लिए शोध में सहायक हो सकता है।

अनुसंधाता

विषयः–रा.उ.प्रा.वि.जामडा पं.स.–सम में कक्षा6 के विद्यार्थियों में समय से पूर्ण पलायन करने की समस्या एवं उसका समाधान

प्रस्तोताः
तैयब खान अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि.जामडा प.सं.
सम मु.जैसलमेर

शोध सार

शोध ओचित्य

(1) विद्यार्थियों के विद्यालय पलायन के कारणों का पता लगाना।
(2) विद्यार्थियों की कक्षा 6 के विद्यार्थियों का कक्षा में ठहराव सुनिश्चित करना।
(3) विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अरूचि का पता लगाना।

उद्देश्य–

कक्षा में विद्यार्थियों के अनियमित उपस्थित होने से अथवा अनुपस्थिति रहने से शिक्षण एवं शिक्षा का स्तर गिरता है। विद्यार्थी पढ़ाई में रूचि नहीं लेते है।शिक्षण में रूचि जागृत करना, विद्यालय में ठहराव सुनिश्चित करना,शोध का उदेश्य है।

समस्या के कथन–

रा.उ.प्रा.वि. जामड़ा में कक्षा 6 के विद्यार्थियों में पलायन पर शोध एवं रोकने के उपयों पर मंथन

समस्या के कारण–

(अ)विद्यालय से घर की दूरी अधिक होना
(ब) विद्यालय तक विद्यार्थियों के पहँचने के साधनों का अभाव
(स) अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों को घरेलू कार्य में लगाना

परिकल्पना–

विद्यार्थी समय पर विद्यालय पहँचेगे जिससे शिक्षण कार्य नियमित होगा,पलायन की समस्या से निजात मिलेगी शिक्षा के स्तर में गुणात्मक वृद्धि होगी एवं शत प्रतिशत नामाकंन का लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

शोध का परिसीमन–

रा.उ.प्रा.वि. जामड़ा पं.स. सम का विद्यालय क्षेत्र

न्यादर्श–

विद्यालय की कक्षा 6 के 8 विद्यार्थी बालक 01 बालिका 07।

उपकरण–

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध को पूर्ण करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर प्रशासित किया गया व साक्षात्कार प्रविधि को अनपाया गया ।

सांख्यिकी व तकनीक–

शोध हेतु दत विश्लेषण कार्य में औसत प्रतिशतता सांख्याकी प्रविधि का प्रयोग किया गया।

दत संकलन,विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रयुक्त प्रश्नावली व साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ो के आधार पर निम्न तथ्य सामने आये।विद्यालय के आठ विद्यार्थियों

आठ अभिभावकों प्रधानाध्यापक सहित दो शिक्षकों से प्रश्न पूछे गये।

निष्कर्ष–

विद्यालय से विद्यार्थियों के पलायन के कारण विद्यालय में शिक्षण प्रक्रिया प्रभावित होती है। और विद्यालय कक्षा कक्ष में रूचि पूर्ण शिक्षण नहीं हो पाता है,अतः अभिभावक प्रश्नावली व विद्यार्थी प्रश्नावली तथा प्रधानाध्यापक प्रश्नावली साक्षात्कार के माध्यम से उनके उत्तरों का विश्लेषण करने के पश्चात निष्कर्ष निकला गया कि–

(1) विद्यालय की दूरी अधिक होने के कारण विद्यार्थी विद्यालय आने में अरूचि रखते है।

(2) आवागमन के साधनों का अभाव भी विद्यालय आने में अरूचि उत्पन्न करता है।

(3) विद्यालय न आने का कारण विद्यार्थियों को घरेलू कार्यों में लगाना भी है।

(4) विद्यार्थियों द्वारा घर में शिक्षण व्यवस्था न होने से कार्य पूरा न होने पर विद्यार्थी विद्यालय आने में संकोच करते हैं

(5) अभिभावकों द्वारा समय से पूर्व विद्यार्थी को छुट्टी दिलवाना विद्यार्थी के विद्यालय आने में बाधा है।

(6) विद्यालय में शिक्षकों की कमी भी पलायन का कारण है।

शोध सुझाव–

(1) विद्यालय तक विद्यार्थियों केलिए आवागमन की व्यवस्था अपेक्षित।

(2) विद्यार्थियों को घरेलू कार्यो से मुक्त रखा जाय।

(3) घर में शिक्षण का माहौल आवश्यक है।

(4) विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों की पूर्ति की जाय।

(5) विद्यालय का वातवरण आनन्ददायी हो।

(6) विद्यायल में रचनात्मक गति विद्यार्थियों को और प्रोत्साहित किया जाय।

(7) शिक्षक अभिभावक संघ की बैठके समय–समय पर आयोजित करने से उक्त समस्या से निजात मिल सकती है।

शोध उपयोगिता–

''कक्षा 6 में विद्यार्थियों के पलायन की समस्या एवं निराकरण का एक अध्ययन''पर क्रियात्मक अनुसंधान किया गया जो मेर विद्यालय की कक्षा 6 के लिए उपयोगी है तथा इसके माध्यम से विद्यार्थियों के पलायन की समस्या का समाधान होगा। यह क्रियात्मक अनुसंधान अन्य विद्यालयों विद्यार्थियों शिक्षकों एवं शिक्षा विदों के लिए उपयोगी होगा। अन्त में मेरे द्वारा किया गया क्रियात्मक अनुसंधान के परिणाम अन्तिम नहीं है। अन्य अनुसंधान कर्त्ताओं केलिए आगे अनुसंधान कार्य में प्रयोग किया जा सकता है।

अनुसंधाता

विषयः–रा.उ.प्रा.विद्यालय दवाड़ा पंचायत समिति सम में प्राथमिक कक्षाओं में गृहकार्य की उपयोगिता

शोध सार

प्रस्तोताः
सुगरसिंह मीना
रा.उ.प्रा.वि.दवाड़ा
पं.स.सम

शोधओचित्य

(1) विद्यार्थियों में नियमित कक्षा एवं गृहकार्य की आदत विकसित करना।

(2) विद्यार्थियों की गृहकार्य के प्रति रूचि जाग्रत करना जिससे उनका भविष्य सुदृढ़ बने।

उद्देश्य–

(1) विद्यार्थियों की कक्षा शिक्षण में रूचि सहभागिता वृद्धि हेतु प्रयास करना।

(2) विद्यार्थियों की घर पर स्वध्याय व लिखित कार्य की आदत विकसित करने हेतु प्रयास करना।

समस्या के कथन–

विषयाध्यापकों और स्वयं द्वारा निरीक्षण के दौरान किए गए अनुभव के आधार पर गृहकार्य के प्रति अरूचि पर शोध व मंथन करना है।

समस्या के कारण–

(1) प्राथमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों का अनियमित रहना तथा अभिभावक द्वारा घर पर गृहकार्य उत्तर पुस्तिकाओं की न्यून मात्रा में जानकारी लिया जाना है।

(2) अभिभावकों का शैक्षिण दृष्टि से पिछड़ा होना तथा आजीविका कार्यों में व्यस्त रहना।

परिकल्पना–

(1) विद्यार्थी गृहकार्य में शुद्ध लेखन की योगयता विकसित कर सकेगें।

(2) सामान्य शब्दों को अशुद्ध लेखन की समस्या का निवारण हो सकेगा।

(3) गृहकार्य को सुन्दर व आकर्षक बनाने में रूचि लेंगें।

शोध का परिसीमन–

प्रस्तुत लघु शोध जैसलमेर जिले के ब्लॉक सम के रा.उ.प्रा.वि.दवाड़ा के प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों,अभिभावकों शिक्षकों व प्रधानाध्यापक तक सीमित रखा गया है।किन्तु यह शोध जैसलमेर एवं जिले से बाहर के विद्यालय एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकता है।

न्यादर्श–

रा.उ.प्रा.वि.दवाड़ा की प्राथमिक कक्षाओं के 12 विद्यार्थी 8 बालक 4 बालिका।

उपकरण–

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध को पूर्ण करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर प्रशासित किया गया व साक्षात्कार प्रविधि को अपनाया गया।विभिन्न तथ्यों के आधार पर लिखवाए गए शब्दों के अन्त में सम्बन्धित समस्या के आधार पर सुझाव भी रखे गए ।

सांख्यिकी व तकनीक–

प्रयुक्त प्रश्नावली से प्राप्त प्रश्नों के विश्लेषण के लिए औसत,प्रतिशत,आवृति की गणन की गई तथा विभिन्न तथ्यों के रूप में निष्कर्ष निकाले गए।

दत्त संकलन एवं व्याख्या–

प्रयुक्त प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़ो का संकलन किया गया इसमें विद्यालय के 12 विद्यार्थी 12 अभिभावक व प्रधानाध्यापक सहित तीन शिक्षकों से प्रश्न पूछे गए।

प्रस्तावना–

वर्तमान में प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं का शोधकर्त्ता द्वारा गहनता से अवलोकन किया गया तो पाया कि जो विद्यार्थी प्राथमिक कक्षाओं में अनियमित रहते है। वे गृहकार्य के प्रति अरूचि रखते है। वे इसे समय पर सम्पादित नहीं करते है। सम्भवतः इस लापरवाही के कारण उनका शैक्षिण स्तर लेखन गति एवं हस्तलेख आदि पिछड़ा रहा है और वे अपेक्षानुरूप ग्रेड प्राप्त नही कर पा रहे है।

विश्लेषण –

क्रियात्मक शोध हेतु चयनित विद्यार्थियों के मूल्यांकन प्रपत्र से स्पष्ट है कि पूर्व परीक्षण,द्वितीय,तृतीय तथा पश्च मूल्यांकन के औसत आंकड़ो में निरन्तर अभिवृद्धि हो रही है,जहां पूर्व परीक्षण में औसत उपलब्धि 4थी वहां पश्च मूल्यांकन के समय औसत उपलब्धि 8 है,अतः क्रियात्मक शोध लिया जाना सार्थक रहा है।

संस्था प्रधान,अध्यापकों तथा अभिभावकों के मिले–जूले प्रयासो से सार्थक परिणाम अपेक्षित रहे।

निष्कर्ष –

रा.उ.प्रा.वि. दवाड़ा पं.स. सम में विद्यार्थियों अभिभावकों तथा शिक्षकों से प्राप्त प्रश्नावली पत्रकों के विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।

(1) अभिभावक अपने बच्चों पर घर पर ध्यान नहीं दे पाते है जिससे बच्चें गृहकार्य नहीं कर पाते है।

(2) विद्यार्थियों में गृहकार्य में रूचि उत्पन्न करने के लिए माहौल जरूरी है जो नहीं मिल पाता है।

(3) विद्यार्थियों को सभी विषयों का गृहकार्य एक साथ दिय जाने के कारण सभी का गृहकार्य नहीं पाते है।

(4) विद्यार्थी घरेलू कार्यों में व्यस्त रहने के कारण अनियमित आते है।

(5) अतःबच्चों को बस्ते के बोझ से तथा स्वतंत्र रहने के लिए बच्चों को गृहकार्य कक्षा कक्ष में ही करवाने से बच्चों का शैक्षिक स्तर उन्नत बनता है।

सुझाव–

(1) संस्था प्रधान को अभिभावक,अध्यापक बैठकों में अभिभावकों को घर पर विद्यार्थी को गृहकार्य करने के लिए प्रेरित करने के लिए कहा जाए।

(2) अध्यापक विद्यार्थियों के माता–पिता से आग्रह करे कि वे नियमित रूप से बस्ता देखे।

(3) अध्यापक विद्यार्थियों के गृहकार्य में सुधार सम्बन्धी सुझाव को उनकी डायरी में टिप्पणी के रूप में करें।

(4) अध्यापक सप्ताह में तीन दिन गृहकार्य जाँच के निश्चित करें।

(5) जाँच के दौरान गृहकार्य उदासीन बच्चों का विशेष ध्यान रखें।

(6) जहां तक हो सके विद्यार्थियों को गृहकार्य कक्षा–कक्ष में ही करवाया जाए।

(7) अध्यापक यह ध्यान रखे कि विद्यार्थी गृहकार्य रूचि से कर रहे है अथवा नहीं तो कारणों का पता करके उनका निराकरण करें।

उपयोगिता

(1) प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के गृहकार्य से सम्बन्धित शोध किया गया तथा इस शोध के माध्यम से गृहकार्य नियमित व सुन्दर तरीके से करेगें।

(2) विद्यार्थियों की सुन्दर लेखन में रूचि विकसित होने पर उनको गुहकार्य करने में अच्छा लगता है।जिससे उनकी लेखन कला का विकास होगा।

(3) विद्यार्थियों को गृहकार्य के क्षेत्र में सुन्दर लेखनी के परिणाम स्वरूप गुणात्मक उन्नयन का प्रतीक होगा।

(4) यह क्रियात्मक अनुसंधान अन्य विद्यालयों विद्यार्थियों शिक्षकों एवं शिक्षा विदो के लिए उपयोगी साबित होगा।

अंत में मेरे द्वारा किया गया क्रियात्मक अनुसंधान का परिणाम अन्तिम नहीं है तथा अन्य अनुसंधान कर्त्ताओं के लिए आगे अनुसंधान में प्रयोग किया जा सकेगा है।

अनुसंधाता

विषयः–रा.उ.प्रा.वि. दरबारी पंचायत समिति जैसलमेर के कक्षा–4 के विद्यार्थियों में गणित विषय के प्रति अरूचि की समस्या एवं उसका समाधान।

'प्रस्तोताः
श्रीमती कुसुम अध्यापिका
रा.उ.प्रा.वि.दरबारी गांव
पं.स.जैसलमेर

शोध सार

शोध औचित्य

(1) विद्यार्थियों की गणित में अरूचि का पता लगाना।
(2) गणित में पूर्व ज्ञान के अभाव का पता लगाना।
(3) विद्यार्थियों के कम ठहराव की समस्या का पता लगाना।

उद्देश्य–

(1) प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को गणित की मूलभूत संक्रियाओं से अवगत करवाना।
(2) गणित संख्याओं का विद्यार्थियों के व्यावहारिक जीवन में उपयोग बताना।

समस्या कथन–

रा.प्रा.वि.दरबारी गांव प.स. जैसलमेर के कक्षा–4 के विद्यार्थियों में गणित विषय के प्रति अरूचि की समस्या एवं उसका समाधान।

समस्या का कारण–

(1) विद्यार्थी में संख्या ज्ञान की समझ का अभाव।
(2) कुछ विद्यार्थियों में ठहराव की अनियमितता।
(3) कुछ विद्यार्थियों को गणित की पुस्तकें स्तरानुकूल न लगना।
(4) कुछ छात्रों में गृहकार्य पूरा करने हेतु समय की कमी होने से पूर्ण अभ्यास न करना।

परिकल्पना–

(1) विद्यार्थी समतलीय आकृतियों के परिमाप व क्षेत्रफल में अंतर कर सकेगें।
(2) छात्र पूर्व संख्याओं की पूर्ववर्ती संख्याएं लिख सकेगें।
(3) छात्र संख्याओं को शब्दों व अंको लिख सकेगें।
(4) छात्र अभाज्य संख्याओं की पहचान कर सकेगें।

शोध का परिसीमन–

प्रस्तुत लघु शोध जैसलमेर जिले के ब्लाक जैसलमेर रा.प्रा.वि.दरबारी गांव के कक्षा 4 के विद्यार्थी।

न्यादर्श–

विद्यालय की कक्षा 4 के 3 बालक 12 बालिकाऐं।

उपकरण–

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध को पूर्ण करने के लिऐ स्व निर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर प्रशासित किया गयो व साक्षात्कार प्रविधि को अपनाया गया।

सांख्यिकी एवं तकनीक

शोध हेतु दत विश्लेषण कार्य में औसत प्रतिशतता सांख्यिकीय प्रविधि का प्रयोग किया गया।

दत्त संकलन एवं व्याख्या

प्रयुक्त प्रश्नावली व साक्षात्कार से प्राप्त आकड़ो के आधार पर तथ्य सामने आये। विद्यालय के 15 विद्यार्थियों 15 अभिभावकों प्रधानाध्यापक सहित 2 शिक्षकों से प्रश्न पूछे गये।

प्रस्तावना–

शिक्षा जीवन का महत्वपूर्ण पहलू है,बालक के सर्वागीण विकास में शिक्षा की महती भूमिका है। शिक्षा के क्षेत्र में गणित विषय के माध्यम से दैनिक जीवन की समस्याओं हिसाब–किताब व व्यहवारिक ज्ञान की दृष्टि से काफी महत्व है। सामान्यतः छात्रों में गणित विषय के प्रति अरूचि होती है। छात्र गणित विषय से डरते है,यह उन्हें कठिन लगता है। शोध के लिऐ कक्षा IV के छात्रों को चुना गया है। छात्रों को विभिन्न संक्रियाओं को हल करने,गणित के इबारती प्रश्नों व अन्य प्रश्नों को हल करने में कठिनाई का अनुभव हुआ।

विश्लेषण–

जैसलमेर जिले के ब्लाक जैसलमेर के राजकीय प्रा.वि.दरबारी गांव के कक्षा 4 के विद्यार्थियों से प्रश्न पत्र हल करवाकर सारणीयन व आलेख खींचा गया। इस शोध की प्रक्रिया में कुल दस प्रश्न 15 विद्यार्थियों से हल करवाकर विश्लेषण किया गया। संस्थाप्रधान ने बताया कि गणित विषय प्रा.कक्षाओं के बच्चों को कठिन लगता है क्यौंकि इसमें समझने की प्रक्रियाऐं ज्यादा होती है। अभिभावकों ने बताया कि बच्चे घरेलू कार्यो में व्यस्त रहने के कारण अधिक अभ्यास कार्य नहीं कर पाते।

निष्कर्ष–

विश्लेषण से प्राप्त आकड़ो के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकले।

(1) संख्याओं को शब्दों व अंको में लिखने से जुड़े प्रश्नों के उत्तरों में यह देखा गया कि पूर्व परिक्षण में अधिकतर छात्र गलत उत्तर दे रहे थे जबकि पश्च परीक्षण में लगभग सभी छात्रों न सही उत्तर दिये।

(2) पूर्व संख्याओं से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों को देखने से यह निष्कर्ष निकलता है कि पश्च परीक्षण में सभी छात्रों ने सही उत्तर दिये।

सुझाव–

(1) विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का पता लगाकर उसी आधार पर शिक्षण कार्य करवाया जाये।

(2) गणित में शिक्षण सहायक सामग्री व गणन। सिखाने में अबेकस का प्रयोग किया जाना चाहिये।

(3) गणित के सवाल मौखिक अभ्यास द्वारा हल करने पर ज्यादा जोर दिया जाये।

(4) अभ्यास द्वारा ज्ञान ज्यादा स्थाई होता है अतः अधिकाधिक अभ्यास करवाया जायें।

उपयोगिता–

विद्यालय के कक्षा 4 के विद्यार्थियों में बार–बार अभ्यास से गणित में रूचि उत्पन्न होने लगी। शिक्षण मे सहायक सामग्री का उपयोग करने से शिक्षण आनन्ददायी होगा। कक्षा 4 के विद्यार्थियों में गणित विषय की मूलभूत संकल्पनाओं में आने वाली समस्यओं के एक अध्ययन पर क्रियात्मक अनुसंधान किया गया। जो मेर विद्यालय की कक्षा 4 के लिए उपयोगी है तथा इसके माध्यम से गणितिय संकल्पनाओं को समझने मे आने वाली कठिनाइयों का समाधान होगा। यह क्रियात्मक अनुसंधान अन्य विद्यालयों विद्यार्थियों शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के लिए उपयोगी साबित होगा।

अनुसंधाता

विषयः शहीद समणलाल मेघवाल रा.प्रा.वि. रामगढ II में कक्षा 5 के विघार्थियों के अंग्रेजी विषय के शब्दों के शुद्ध उच्चारण एवं लेखन की समस्या एवं उसका समाधान।

शोधसार

प्रस्तोता–
रघुवीर दान चारण शिक्षक
अ.श.रमणलाल मेघवाल
रा.प्रा.वि.रामगढ II

शोध औचित्य–
(1) विद्यार्थियों के अंग्रेजी भाषा के शुद्ध उच्चारण व लेखन की समस्या का पता लगाना।
(2) अंग्रेजी भाषा की कक्षा 5 की पुस्तक के कठिनाई स्तर का पता लगाना।
(3) कक्षा 5 के विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा के प्रति अरूचि के कारणों का पता लगाना।

उदेश्य–
(1) विद्यार्थियों में अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध उच्चारण की योग्यता विकसित करना।
(2) विद्यार्थियों में अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध लेखन की योग्यता।
(3) विद्यार्थियों में अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध लेखन को अपने व्यवहारिक जीवन में उपयोग करने की कला विकसित करना।

समस्या कथन–
शहीद रमणलाल मेघवाल रा.प्रा.वि. रामगढ II के कक्षा 5 के विद्यार्थियों के अंग्रेजी विषय के कथन व लेखन की समस्या का समाधान।

समस्या कारण–
(1) विद्यार्थियों द्वारा अंग्रेजी विषय के उच्चारण एवं लेखन का अभ्यास नहीं करना।
(2) अंग्रेजी बोल–चाल की भाषा न होने के कारण कक्षा–कक्ष के अतिरिक्त उसे कही भी न सुन पाना।
(3) अंग्रेजी कठिन विषय एवं अंग्रेजी में पारंगत विषयाध्यापक का अभाव।

परिकल्पना–
(1) विद्यार्थी अंग्रेजी का शुद्ध उच्चारण सीखेंगे, जब उच्चारण शुद्ध होगा तो लेखन भी शुद्ध होगा।
(2) अंग्रेजी जैसे कठिन विषय में भी रूचि लेंगे।
(3) विद्यार्थी शब्दों का शुद्ध लेखन करेंगे तथा उनका वाक्यों में भी प्रयोग कर कसेंगे।

शोध परिसीमा–
शहीन रमणलाल मेघवाल रा.प्रा.वि.रामगढ ष्का विद्यालय क्षेत्र।

न्यादर्श–
विद्यालय की कक्षा 5 के 14 विद्यार्थी।बालक 03 बालिकाऐं 11

उपकरण–
प्रस्तुत क्रियत्मक शोध को पूर्ण करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्न पत्र उपकरण का निर्माण कर विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया।विभिन्न तथ्यों के आधार पर पूछे गये प्रश्नों के अन्त में संबंधित समस्या के सुझाव भी दिये गये।

सांख्यिकी एवं तकनीक–

शोध हेतु दत्त विश्लेषण कार्य में औसत प्रतिशतता सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया।

दत्त संकलन एवं व्याख्या–

जैसलमेर जिले की सम पंचायत समिति के ''शहीद रमणलाल मेघवाल रा.प्रा.वि.'' के कक्षा 5 के 14 विद्यार्थियों से प्रश्न पत्र भरवा कर सारणीकरण किया गया।

कक्षा 5 के 14 विद्यार्थियों से 10 प्रश्न की प्रश्नावली भरवायी गई।

विश्लेषण–

संस्थाप्रधान ने बताया कि कक्षा 5 के विद्यार्थी अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध उच्चारण व लेखन में कठिनाई अनुभव करते है, जिसके उन्होने व्यापक कारण बताये, तदनुसार–

(1) 92: विद्यार्थियों ने बताया कि वे घर पर अंग्रेजी शब्दों के उच्चारण व लेखन का अभ्यास नहीं करते है।

(2) 60: अध्यापकों ने बताया कि विद्यार्थियों का स्तर अंग्रेजी विषय में स्तरानुसार नहीं है

(3) 95: विद्यार्थियों ने बताया कि पुस्तक का स्तर कक्षा 5 से ऊँचा है।

(4) 80: अभिभावकों ने बताया कि विद्यार्थी घरेलू कार्यो में लगे रहते है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध उच्चारण एवं लेखन की समस्या है जिसका निष्कर्ष निम्नानुसार निकाला गया कि–

(1) अंग्रेजी बोलचाल की भाषा न होने के कारण विद्यार्थियों को अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध उच्चारण व लेखन की समस्या आती है।

(2) विद्यार्थियों द्वारा घर पर अंग्रेजी उच्चारण व लेखन का अभ्यास न करने के कारण अंग्रेजी शब्दों के उच्चारण व लेखन की समस्या आती है।

(3) अंग्रेजी विषय अध्यापक न होने के कारण भी अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध उच्चारण व लेखन की समस्या आती है।

(4) अभिभावकों द्वारा गृहकार्य जांच नहीं करने के कारण विद्यार्थियों में अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध अच्चारण व लेखन की समस्या आती है।

शोध सुझाव–

(1) विद्यार्थियों में अंग्रेजी शब्दों की अत्यांक्षरी करवाई जाये।

(2) अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध उच्चारण व लेखन हेतू कक्षा कार्य के साथ–साथ गृहकार्य अधिकाधिक दिया जाये।

(3) अंग्रेजी के छोटे–छोटे सर शब्दों को कक्षा में दीवारों पर लिखकर उनका शुद्ध उच्चारण करवाया जाये।

(4) अंग्रेजी के विषयध्यापक की विद्यालय में नियुक्ति की जाये।

शोध उपयोगिता–

कक्षा 5 के विद्यार्थियों के अंग्रेजी विषय के शब्दों के शुद्ध उच्चारण व लेखन की समस्या पर क्रियात्मक शोध किया गया जिसकी उपयोगिता निम्नानुसार है।

(1) Tree व Money शब्दों का उच्चारण शतप्रतिशत विद्यार्थी सीख सकेगें।

(2) Roof एवं Knif शब्द का उच्चारण 100% विद्यार्थी कर सकेगें।

यह क्रियात्मक अनुसंधान अन्य विद्यालयों, विद्यार्थियों ? शिक्षकों व शिक्षाविदों के लिऐं उपयोगी होगा अंत में मेरे द्वारा किया गया, क्रियात्मक अनुसंधान के परिणाम अंतिम नहीं है। अन्य अनुसंधानकर्ताओं के लिऐं आगे अनुसंधान कार्य में प्रयोग किया जा सकता है।

अनुसंधाता

शोध प्रतिवेदन (प्रभाग स्तरीय)IFIC

जैसललमेर जिले की उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विज्ञान किट का अधिकतम उपयोग

शोध निर्देशक

श्री बजरंगसिंह शेखावत
(प्रधानाचार्य)
डाईट, जैसलमेर

शोधकर्ता

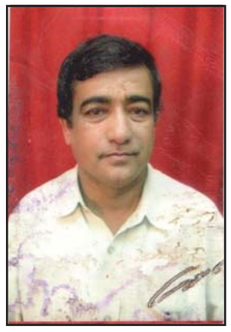

श्री महेश कुमार बिस्सा (व.व्याख्यता)
M.sc. BEd.
एवं प्रभागाध्यक्ष IFIC
डाईट जैसलमेर

श्री बंशीधर पुरोहित (व्याख्याता)
M.sc. MEd.
शोध प्रभारी
डाईट जैसलमेर

विषयः जैसलमेर जिले के उ.प्रा.वि.में विज्ञान किट का अधिकतम उपयोग

:: प्रभाग स्तरीय (IFIC)शोधसार::

महेश कुमार बिस्सा
(व.व्याख्याता)

बंशीधर पुरोहित
(व्याख्याता)

शोध औचित्य–

जिलें में राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद के तत्वाधान में अतिशिक्षा अभियान द्वारा उ.प्रा.वि.विज्ञान किट आंवटित किये गये है शिक्षक इसका उपयोग कर शिक्षक को प्रभवी बनाने के साथ आनंददायी भी बना सकते है। विज्ञान किट का किटा का किस प्रकार विद्यालयों में उपयोग हा रहा है। साथ ही विज्ञान किट के साथ शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाना हमारे शोध का मन्तत्य है।

शोध उदेश्य

विज्ञान किट की विद्यालय में उपलब्धता का पता लगाना।
शिक्षा में आने वाली कठिनाईयों का पता लगाना।
कठिनाई निवारण हेतु सुझाव देना।

परिकल्पना

विज्ञान किट के साथ शिक्षण कार्य करवाने से शिक्षण में निखार आयेगा उत्तरोतर गुणात्मकता में वृद्धि होगी बालकों के स्थाई ठहराव से नामांकन बढेगा।
विज्ञान किट एक उपयोगी किट है जिसका सभी विद्यालय में होना आवश्यक है।

न्यादर्श

10 शिक्षक , 10 हेडमास्टर, 5 अभिभावक, 18 विद्यार्थी
शोध विधि
सर्वेक्षण विधि
शोध उपकरण
प्रश्नावली (शिक्षक, प्र.अ., विद्यार्थी हेतु)

अनुसुची

प्रयुक्त सांख्यिकी
औसत प्रतिशत

दत्त संकलन

शोधकर्ता द्वारा स्वयं, उपस्थित शिक्षकों व डाक द्वारा दक्ष संकलन किया गया

दत्त विश्लेशण व व्याख्या

प्राप्त दत्तों का सुव्यवस्थित एकत्रीणकरण सारणी यन व विश्लेषण कर व्याख्या की गई।

निष्कर्ष

–प्राप्त दत्तों का विश्लेषण

–शत प्रतिशत शिक्षकों को बताया कि विज्ञान किट शाला में मौजूद है। उसका उपयोग करते है।

–शिक्षकों ने किट को उपयोगी बताया

–कठिन स्तर निर्धारण मे विज्ञान किट की सामग्री का उपयोग करते है।

–56 प्रतिशत शिक्षक कक्षा में प्रयोग करके स्वयं बनाते है शेष समुह बनाकर प्रयोग करवाते है।

–विज्ञान किट की सामग्री टूटने पर संस्था प्रधानो द्वारा नाराजगी प्रकट नहीं की जाती है।

–70 प्रतिशत शिक्षकों ने किट के उपयोग हेतु पृथक से समय की आवश्यकता बताई।

–सभी संस्था प्रधान शिक्षकों की पहुँच में किट रखते है।

–विद्यार्थियों के द्वारा कार्य के दौरान उपकरण टूटने पर दण्ड नहीं दिया जाता है।

–विज्ञान किट की गुणवता पर सभी ने संतोष प्रकट किया।

–शत प्रतिशत छात्रों / शिक्षकों के सामग्री की संस्था बढाने पर सहमति दी।

–100 शिक्षकों के पृथक कालांश की मन्शा प्रकट की।

–शिक्षकों/छात्रों के किट में नवीन उपकरणों की आपूर्ति पर सहमति दी।

–शिक्षण के प्रति रूचि प्रकट की।

विद्यार्थियों की प्रश्नावली विश्लेषण

–30प्रतिशत छात्र चित्रात्मक पद्धति के पक्ष में शेष प्रयोगात्मक के 95 प्रतिशत शिक्षक प्रयोग का मात्र प्रदर्शन करते है।

–शत प्रतिशत छात्रों शिक्षकों के शिक्षण में संतुष्टि जाहिर की समस्त विद्यालयों में किट के प्रयोग से शिक्षण में सुधार

–विज्ञान किट में उपलब्ध पुस्तिका को 100 शिक्षकों के उपयोगी बताया।

–संस्था प्रधान की अनुपस्थिति में शिक्षक सहज भाव से किट का उपयोग करते है।

–शत प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि इससे विज्ञान शिक्षण में रूचि बढी है।

–विज्ञान किट में कुल उपकरणों की संख्या पूछने पर अधिकांश ने सही उतर नही बताया।

–80 प्रतिशत शिक्षकों का विज्ञान उपकरणों की पूर्व में जानकारी

–100 प्रतिशत शिक्षक विज्ञान किट को बोझ नहीं समझते है।

–100 प्रतिशत विद्यालयों में प्र अ अथवा एक शिक्षक किट के संबंध में प्रशिक्षण प्राप्त है।

–शत प्रतिशत संस्था प्रधान प्रयोग के दौरन उपकरण टूटने पर नाराज नहीं होते है।

–80 प्रतिशत संस्था प्रधान के किट अपने दायित्व में रखा हैं।

–आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक का तुरन्त उपलब्ध कराते है।

सुझाव

कार्यरत मॉडल उपलब्ध कराये जाये। (वर्किंग मॉडल)

प्रयोग प्रदर्शन में समय–अवधि बढाई जावे।

प्रत्येक विद्यार्थी को स्वयं कर के सीखने का अवसर मिले।

पाठ प्रारम्भ से पूर्व प्रदर्शित प्रयोग का सूचीकरण से प्रयोग प्रदर्शन जिज्ञासा पैदा करेगा।

समय–समय पर टूटने वाले उपकरणों को उपलब्ध कराये जाना अपेक्षित

TLM/SFG से उपकरण क्रय करने हेतु निर्देश जारी कराये जाना अपेक्षित

अधिकारी विद्यालय अवलोकन के समय विज्ञान किट का उपयोग भी देखे।

उपयोगिता

उपलब्ध कराये किट से शिक्षण में प्रभाविता आने के साथ नामांकन ठहराव बढेगा एवं किट का भली प्रकार उपयोग होगा।एवं किट से सम्बन्ध में आगामी शोध हेतु शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शन करेगा।

अनुसंधाता

जिला अनुसंधाता वाकपीठ (डर्फ) जैसलमेर
विद्यालय स्तर पर क्रियात्मक अनुसंधान (सत्र 2015–16)
:: शोधसार प्रारूप ::

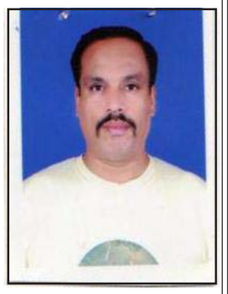

1.शोध शीर्षक–
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय काहला में इन्डोर गेम्स (बन्द परिसर में या घर पर खेले जाने वाले) की जानकारी का अभाव और उसका समाधान!

2. शोध का विस्तृत क्षेत्रः–
रा.उ.प्रा.वि. काहला

3. शोधकर्ता का नाम व पदः–
मुकेश कुमार व्यास,अध्यापक,रा.उ.प्रा.वि. काहला,पंचायत समिति, जैसलमेर

4. संस्था का नाम एवं पता जहां शोध कार्य किया गयाः–
रा.उ.प्रा. विद्यालय कहाला पंयायत पं.स. जैसलमेर

5.शोधकार्य पूर्ण करने का वर्षः– 2015–16

6. उदेद्श्य :–
(1) इन्डोर गेम्स की जानकारी न होने के कारणों का पता लगाना।
(2) इन्डोर गेम्स की जानकारी न होने के कारणों का अध्ययन कर उसका समाधान करना।
(3) इन्डोर गेम्स को विद्यार्थियों में रूचिकर बनाने का प्रयास करना।

7. अध्ययन की परिसीमाएँ एवं भौगोलिक क्षेत्र :–
शोध का क्षेत्र राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय काहला और गांव काहला तक ही सीमित रखा गया।

8. शोध विधि एवं उपकरण :–
प्रश्नावली अनुसुची एवं खेल प्रदर्शन

9. मुख्य निष्कर्ष :– शोध से पूर्व
(1) शोध से पूर्व 70 से 80 प्रतिशत विद्यार्थियों को इन्डोर गेम्स की जानकारी नही थी।
(2) परिवार के लोग साथ में कभी कभी ही बैठ पाते थें
(3) विद्यार्थी विद्यालय समय पश्चात पूरे दिन टी.वी. देखते थे।

शोध के पश्चात
(1) खेल प्रदश्न विधि से 70 से 75 प्रतिशत विद्यार्थियों में इन्डोर गेम्स के प्रति रूचि बढ़ी है।
(2) इन्डोर गेम्स खेलने से परिवार के सदस्यों के साथ तालमेल और अच्छा हुआ है।
(3) इन्डोर गेम्स खेलने से विद्यार्थियों के मानसिक विकास में वृद्धि हुई है।

10. सुझाव :–
(1) विद्यालय स्तर पर इन्डोर गेम्स को बढ़ावा देने के लिये खेल कालांश होना चाहिए।
(2) विद्यालय स्तर पर समय–समय पर प्रतियोगिताएं होनी चाहिएं।
(3) अध्यापकों को अभिभावकों से सम्पर्क कर उन्हें अपने बच्चों के साथ कोई खेल खेलने हेतू प्रेरित किया जाय।
(4) ज्यादा टी.वी. न देखने हेतू प्रेरित किया जाना चाहिए।

:: शोधसार ::

1.क्रियात्मक शोध का शीर्षक–
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय काहला के विद्यार्थियों में इन्डोर गेम्स की जानकारी का अभाव एवं समाधान ।

2. क्रियात्मक शोधकर्ता:–
नाम– श्री मुकेश कुमार व्यास
पद – अध्यापक
विद्यालय – रा.उ.प्रा.वि.काहला,पंचायत समिति जैसलमेर

3.क्रियात्मक शोध की प्रस्तावना:–
विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी के सर्वांगींण विकास के लिये शिक्षण कार्य के साथ साथ खेल खेलना भी अति आवश्यक है और इन्डोर खेल खेलना भी अति आवश्यक है और इन्डोर गेम्स खेल का ही एक महत्वपूर्ण अंग है।रा. उ.प्रा.विद्यालय काहला में पर्यावरण का अध्ययन करवाते समय यह पाया की विद्यार्थियों को इन्डोर गेम्स जैसे शंतरंज,सांप सीढ़ी,लुडो,कैरमबोट,बैडमिन्टन ,टेबल टेनिक व्यापार आदि खेलों की जानकारी नहीं है यही हाल उ. प्रा.कक्षाओं का भी था जब पूरे विद्यालय को प्रार्थना स्थल पर इनके बारें में पूछा गया तो 70 प्रतिशत विद्यार्थियों को इसकी जानकारी नहीं थी जो कि विद्यालय स्तर पर एक बड़ी समस्या थी फिर अभिभवकों से सम्पर्क करने पर पता चला कि विद्यार्थियों के अभिभावक ज्यादातर मजदूरी या खेती करते है जिसके चलते दिन में घर पर कोई नहीं रहता और विद्यार्थी टी.वी. देखते रहते है या घर के कार्यों में व्यस्त रहते है।जिसके कारण वे इन्डोर गेम्स नहीं खेल पाते और विद्यालय स्तर पर इन खेलों की पूर्ण सुविधाएं उपलब्ध न होने के कारण इनकी जानकारी का अभाव है। अतः विद्यार्थियों को इन खेलों की जानकारी हो तथा वो उन्हें खेल सके इस पर विचार करना परम आवश्यक है और इसी आवश्यकता के कारण शोध की आवश्यकता महसूस की गई।

4. क्रियात्मक शोध के उदेद्श :– इस क्रियात्मक शोध के उदेद्श्य निम्नलिखित है।
(1) इन्डोर गेम्स की जानकारी न होने के कारणों का पता लगाना।
(2) इन्डोर गेम्स की जानकारी न होने के कारणों का अध्ययन कर उसका समाधान करना।
(3) इन्डोर गेम्स को विद्यार्थियों में रूचिकर बनाने का प्रयास करना।

5. क्रियात्मक शोध का महत्व :–
शोध का महत्व विद्यालय में शिक्षण कार्य के साथ विद्यार्थियों के सार्वंगीण विकास की दृष्टि से विशेष है इससे विद्यार्थियों में इन्डोर गेम्स के प्रति रूचि पैदा होगी और उनका मानसिक विकास होगा साथ ही अनुशासन, खेल,भावना,सहयोग की भावना और नेतृत्व जैसे गुणों का विकास होगा जो की जीवन में अति आवश्यक है।

6. समस्या :–
(A) परिसीमन:– शोध का क्षेत्र रा.उ.प्रा.वि. काहला और गांव कालता तक ही सीमित रखा गया है।
(B) न्यादर्श:– अध्ययन हेतू प्रत्येक कक्षा में से 2–3 विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों से सम्पर्क किया।
(C) विद्यार्थी:– विद्यार्थी में छात्र–छात्राएं दोनो शामिल है।
(D) इन्डोर गेम्स :– बन्द परिसर में खेले जाने वाले या ऐसे खेल जो बैठे– बैठे खेले जा सकते है।
(E) प्रश्नावलियां :– अध्यापक वर्ग, अभिभावक वर्ग और विद्यार्थी वर्ग हेतु बनाकर पता लगाया गया जिससे पता चला की 70 से 80 प्रतिशत विद्यार्थियों को इनकी जानकारी नहीं है।

(F) समस्या के कारणों का विश्लेषण :–

(1) विद्यार्थियों को ऐसे खेलों की जानकारी नहीं है क्योंकि घर पर इस प्रकार के खेल नहीं है।

(2) विद्यार्थियों में टी.वी. अधिक देखने की समस्या है।

(3) विद्यालय स्तर पर भी इस प्रकार के खेलों की सामग्री का ना होना।

7. क्रियात्मक परिकल्पनाः–

यदि विद्यालय स्तर पर इस प्रकार के खेलों की सामग्री हो या अभिभावकों से सम्पर्क कर उन्हें इस प्रकार के खेलों की सामग्री लोने हेतू प्रेरित किया जाये तो इस समस्या का समाधान हो सकता है।

8. मूल्यांकन :–

प्रस्तुत क्रियात्मक परिकल्पनाओं को सत्यता का मूल्यांकन के आधार पर किया गया है। शोध कर्ता द्वारा मूल्यांकन विधि को अधिक से अधिक वस्तुनिष्ठ बनाने को प्रयत्न किया गया है। मुख्य रूप से प्रश्नावली अनुसुचह, अवलोकन और खेल प्रदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

9. शोधकर्ता की टिप्पणी और निष्कर्ष :–

शोध के क्रियान्वयन के समय जो विशेष परिस्थितियां उत्पन्न हुई उनका विवरण व्यवस्थित रूप से दिया गया जिससे 80 प्रतिशत विद्यार्थियों को इन खेलों की जानकारी हुई ओर धीरे–धीरे इन खेलों में रूचि बढ़ी और टी.वी. देखने की प्रवृति कम हुई उनके मानसिक विकास में वृद्धि हुई और शिक्षण कार्य में सहायता मिली और विद्यार्थियों में अनुशासन और सहयोग की भावना का विकास हुआ।

10. सुझाव :–

(1) विद्यालय स्तर पर इन खेलों का कालांश होना चाहिए।

(2) विद्यालय में समय–समय पर प्रतियोगिताओं का आयोजन होना चाहिए।

(3) अभिभावकों से सम्पर्क कर उन्हें बच्चों के साथ खेलने हेतु प्रेरित किया जाये।

(4) ज्यादा टी.वी. ना देखने हेतु प्रेरित किया जाना चाहए।

11. उपादेयात :–

विद्यार्थी के सर्वागींण विकास के लिये और उसके मानसिक विकास के लिये इन खेलों की जानकारी ओर खेलना अति आवश्यक है। जिससे विद्यार्थी स्वस्थ और खेलना अति आवश्यकत है। जिससे विद्यार्थी स्वस्थ ओर तंदूरूस्त रहेगा और अधिगम हेतु सजग रहेगा। विद्यार्थियों में अन्य कई प्रकार के गुणों का विकास होगा। और आधुनिक जगत में वह शिक्षण के साथ साथ इस प्रकार के खेलों के माध्यम से भी अपना और अपने परिवार का नाम रोशन कर सकता है।

अनुसंधाता

:: शोधसार ::

1.शोध शीर्षक–
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रिदवा में सी.सी.ई. की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

2. शोधकर्त्ताः–
श्री अमजद खांन, अध्यापक,
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,रिदवा पंचायत समिति– जैसलमेर

3. औचित्यः–
सी.सी.ई. से शिक्षण की गुणात्मकता बढ़ती है।,शिक्षण गुणात्मकता पर सी.सी.ई. के प्रभाव का अध्ययन करना।

4. परिकल्पना :–
(1) विद्यार्थियों के सतत मूल्यांकन से प्रतिस्पर्धा कम होती है।
(2) सी.सी.ई. विधि से नामांकन में वृद्धि होती है।
(3) विद्यार्थियों में सकारात्मकता बढ़ती है।
(4) सी.सी.ई. विधि लागू होने से बच्चों का स्कूल से जुड़ाव बना रहता है।
(5) सी.सी.ई. से विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास होता है।

5.सीमांकन :– राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रिदवा की कक्षा 4 के 10 विद्यार्थी

6. न्यादर्श :–
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रिदवा की कक्षा 4 के 10 विद्यार्थी छात्र 3, छात्रा 7

7. शोध विधि :–
शोध हेतु निम्न विधियों का प्रयोग किया जाएगा :–
(1) प्रश्नावली विधि
(2) साक्षात्कार विधि

8. उपकरण (तकनीक) :–
(1) प्रश्नावली
(2) मौखिक साक्षात्कार
(3) व्यक्तिगत सम्पर्क

9. दत्त संकनल :–
(1) अभिभावक, छात्र–छात्रा,शिक्षक, प्रधानाध्यापक से पूछे गये प्रश्नों हेतु प्रश्नावली
(2) अभिभावक, विद्यार्थियों,प्रधानाध्यापक,अध्यापकों के मौखिक साक्षात्कार

10.दत विश्लेषण :– शोध से प्राप्त दत संकलनों का विश्लेषण किया गया जिसका सार निम्न हैः–
(1) प्रधानाध्यापक जी के अनुसार सी.सी.ई. विधि द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षण कराना सरल है।
(2) 25 प्रतिशत अध्यापक मानते है कि सी.सी.ई. मे दस्तावेज कार्य कम है।
(3) 60 प्रतिशत विद्यार्थी मानते है ग्रेडिंग देना सही है।
(4) 70 प्रतिशत अभिभावक मानते है कि सी.सी.ई. विधि द्वारा बच्चों का अध्ययन उचित है।
(5) 100 प्रतिशत अभिभावक मानते है सी.सी.ई. विधि से विद्यार्थी की रचनात्मकता बढती है।

(6) प्रधानाध्यापक जी के अनुसार सी.सी.ई. कार्यक्रम से विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा कम होती है।
(7) 100 प्रतिशत अध्यापक मानते है कि सी.सी.ई. विधि शिक्षण के लिए उपयुक्त है।
(8) 70 प्रतिशत अभिभावक मानते है सी.सी.ई. विधि से बच्चों में तनाव कम होता है।
(9) 70 प्रतिशत विद्यार्थी मानते है कि सी.सी.ई. किताबों से पढना अच्छा लगता है।
(10) प्रधानाध्यापक के अनुसार सी.सी.ई. पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता है।

11 निष्कर्ष :–

विद्यार्थियों, अभिभावकों, अध्यापकों,प्रधानाध्यापक से प्राप्त दत सकंलनों का विश्लेषण करने पर निम्न निष्कर्ष निकलते है:–

(1) सी.सी.ई. विधि बच्चों के अध्यापन के लिए उपयुक्त है।
(2) सी.सी.ई. विधि मे दस्तावेज कार्य अधिक होता है।
(3) सी.सी.ई. विधि से प्रतिस्पर्धा कम होती है।
(4) सी.सी.ई. विधि से प्रतिस्पर्धा कम होती है।
(5) सी.सी.ई. विधि द्वारा बच्चों का सतत् आकलन ओर मूल्यांकन प्रभावी होता है।
(6) सी.सी.ई. विधि द्वारा विद्यार्थियों का शिक्षण से जुड़ाव बना रहता है।
(7) गतिविधि द्वारा शिक्षण से बच्चों में रूचि उत्पन्न होती है।
(8) यह रटने की विधि न होकर कर के सीखने की विधि है।
(9) ग्रेडिंग देने से विद्यार्थियों में सकारात्मकता का विकास होता है।
(10) सी.सी.ई. किताबों का पाठ्यक्रम सरल और अच्छा है।

12 शोध की उपयोगिता :–

(1) सी.सी.ई. विधि की प्रभावशीलता के अध्ययन से विद्यालयों में सी.सी.ई. का सम्पूर्ण ज्ञान होगा
(2) अभिभावकों की राय के अनुसार सी.सी.ई. की प्रभावशीलता का पता चलता है।
(3) सी.सी.ई. के द्वारा बच्चों का स्कूल से जुड़ाव बढ़ेगा।
(4) यह शोध विद्यालयों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।
(5) छात्रों के विचार द्वारा सी.सी.ई. की उपयोगिता का पता चलता है।
(6) छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी है।

13 सुझाव :–

(1) सी.सी.ई. विधि के पाठ्यक्रम में सम्पूर्ण क्षैत्र बाद के अनुसार ज्ञान होना चाहिए
(2) इस में दस्तावेज कार्य कम होना चाहिए
(3) अभिभावको,अध्यापकों द्वारा गतिविधि को बढावा देना चाहिए।
(4) अध्यापकों को व्यावहारिक ज्ञान और क्षैत्रीय भाषा के साथ अध्ययन करना चाहिए।

अनुसंधाता

:: शोधसार ::

1. शीर्षक :–
रा.प्रा.वि. कलरों की ढाणी, जैसलमेर में कक्षा 5 के विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि का अध्ययन ।

2 शोधकर्ता :– मंजुला,अध्यापिका (रा.प्रा.वि.कलरों की ढाणी,जैसलमेर)

3 औचित्य :– कक्षा 5 के विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति रूचि जागृत करना व उनकी समस्याओं का समाधान करना।गृहकार्य करने में रूचि जागृत करना।

4 परिकल्पना :– विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति रूचि जागृत होनी व विद्यार्थियों को अंग्रेजी पढ़ने व लिखने में सरलता होगी।विद्यार्थी गृहकार्य करने में रूचि लेंगें।

5 सीमांकन :– कक्षा 5 के विद्यार्थी (राजकीय प्राथमिक विद्यालय कलरों की ढाणी,जैसलमेर)

6 न्यादर्श :– कक्षा 5 के 9 विद्यार्थी

7 विधि :– प्रश्नोत्तर विधि, साक्षात्कार

8 उपकरण :– प्रश्नावली

9 दत्त संकलन :– प्रस्तुत शोधकार्य के अन्तर्गत दत्त संकलन किया जाएगा।

10 दत्त विश्लेषण :– प्रधानाध्यापक,अभिभावक,विद्यार्थी व अध्यापक के दत्त संकलनों के आधार पर दत्त विश्लेषण किया जाएगा।

11 दत्त विश्लेषण की व्याख्या :– प्रथम चरण में विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि के कारणों का पता लगाया गया। अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि के कारणों का पता लगाने के पश्चात विद्यार्थियों को विषय के प्रति प्रोत्साहित किया गया,उपर्युक्त शिक्षण विधि का प्रयोग किया गया, अभिभावकों को उचित निर्देश दिए जिससे वे विद्यार्थियों को गृहकार्य करने के लिए अभिभावक, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।अंग्रेजी की कक्षा में साकारात्मक वातारण विकास हेतु आवश्यक है।द्वितीय चरण में प्रश्नावली के आधार पर प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से निम्न आंकडे प्राप्त होते है कि :–

(1) शत प्रतिशत अभिभावकों अंग्रेजी विषय की उपयोगिता का ज्ञान है।
(2) शत प्रतिशत अभिभावकों को पता है कि उनका बालक अंग्रेजी विषय में रूचि नहीं लेता है।
(3) 60 प्रतिशत अभिभावक अपने बालकों की समस्या को समझ कर उनकी सहायता करने का प्रयास करते है जबकि 40 प्रतिशत ऐसे अभिभावक है जौ सहायता करने मे असमर्थ है।
(4) 35 प्रतिशत अभिभावक,अध्यापक,अभिभावक बैठक मे आते है जबकि 65 प्रतिशत अभिभावक बैठक में उपस्थिति नहीं देते ।
(5) विद्यार्थियों को घरेलू कार्य में व्यस्त रखा जाता है।
(6) गृहकार्य करने का समय ही नही मिल पाता।
(7) उचित वातावरण की कमी ।
(8) अभिभावकों को पढ़ा लिखा ना होगा।

12 निष्कर्ष :– दत्त विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि के लिए अनेक तत्व प्रभावित है।दन्त विश्लेषण के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले गए :–

(1)अभिभावकों की एस.एम.सी. मीटिंग में उपस्थिति कम है।

(2) अंग्रेजी विषय के प्रति उदासीनता की अभिभावको को ज्ञान ही नही है।

(3) अभिभावकों को अंग्रेजी का सामान्य ज्ञान नहीं है।

(4) अभिभावक गृहकार्य करवाने में बालकों की सहायता सामग्री कर सकते है

(5) कक्षा में सहायक सामग्री का प्रयोग कम है।

(6) शिक्षण तकनीक में नयापन नहीं है।

(7) अंग्रेजी विषय के लिए उचित व सकारात्मक वातावरण की कती।

13 शोध की उपयोगिता :– उपर्युक्त निष्कर्षो के आधार पर निम्नलिखित उपयोगिता बताई जा सकती है।

(1) विद्यार्थियों में अंग्रेजी पढ़ने मे रूचि जागृत होगी।

(2) विद्यार्थी अंग्रेजी के नए शब्दों को पढ़ने मे और याद करने में रूचि लेने लगेगें है।

(3) विद्यार्थी अंग्रेजी की पुस्तक पढ़ने मे रूचि लेने लगें है।

(4) विद्यार्थी अंग्रेजी का गृहकार्य करने में तथा अंग्रेजी के नए शब्दों द्वारा वाक्य बनाने मे रूचि लेगें।

(5) पुस्तकालय में अंग्रेजी की पुस्तको की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षिक होने लगेगा है।

(6) अभिभावक छात्रों की समस्याओं की ओर ध्यान देगें

(7) एसएमसी बैठक में उपस्थित देगें।

(8) अध्यापक नई तकनीक का प्रयोग करने का प्रयास करेगें जिससे शिक्षण में गुणवता बढेगी।

14. सुझाव :–

(1) विद्यालय में अंग्रेजी के नियमित कालांश होने चाहिए।

(2) अभिभावक अंग्रेजी का गृहकार्य करवाने में छात्रों की सहायता करें।

(3) अंग्रेजी के लिए कक्षा में सकारात्मक वातावरण दिया जाए।

(4) शिक्षण विधि व शिक्षा तकनीक में सुधार किए जाए।

(5) समय समय पर एसएलएम मीटिंग का आयोजन किया जाए।

(6) प्रधानाध्यापक छात्रों की प्रगति की रिपोर्ट रखे।

(7) घरेलू कार्यो में विद्यार्थियों को ना लगाये।

(8) पुस्तकालय में अंग्रेजी की पुस्तकों की व्यवस्था होनी चाहिए।

अनुसंधाता

:: शोधसार ::

कमल दान अध्यपाक
रा.उ.प्रा.वि. ख्याला (सम जैसलमेर)

शीर्षक :–

अल्पसंख्यक बालिकाओं का प्राथमिक स्तर के बाद शिक्षा से पलायन की समस्या एक अध्ययन

शोधकर्ता :–

कमल दान (अध्यापक)
रा.उ.प्रा.वि.ख्याला पंचायम समिति सम जैसलमेर

औचित्य :–

राजकीय विद्यालयों में अल्पसंख्यक बालिकाओं का प्राथमिक स्तर के उपरान्त शिक्षा में जागरूकता लाना।

परिकल्पना :–

सरकारी विद्यालयों में अल्पसंख्यक वर्ग को बालिकाओं द्वारा प्राथमिक शिक्षा के पश्चात निम्न परिकल्पना तर्को के द्वारा शाला में शिक्षा के पलायन हेतु अनिवार्य तत्व है।

(1) अशिक्षा
(2) बालविवाह को बढाना देना।
(3) अभिभावकों का निरक्षर होना।
(4) आत्मनिर्भरता की कमी होना।
(5) सामाजिक रूढियो का दृष्टिगोचर होना।

सीमांकन :–

रा.उ.प्रा.वि.ख्याला पंचायत समिति सम जैसलमेर के कक्षा VI,VII व VIII की अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं द्वारा सीमांकन करना संख्या – कक्षा–6–3 छात्राएं, कक्षा VII – 5 छात्राएं कक्षा VIII – 3 छात्राओं का सर्वेक्षण रकना।

शोध समस्या के लिए अल्पसंख्यक बाहुल्य वाले गांव ख्याला के विद्यालय का चयन किया गया है।

न्यायादर्श :–

रा.उ.प्रा.वि. ख्याला पंचायत समिति सम के बालक एवं बालिकाओं (कक्षा 6,7, व 8 की अल्पसंख्यक बालिकाएं)

विधि :–

– प्रश्नोत्तर विधि
– साक्षात्कार विधि
– अवलोकन विधि
– अभिमतावली विधि आदि

उपकरण :–

– प्रधानाध्यापक, कक्षाध्यापक,छात्र एवं
– बालिकाओं के लिए प्रश्नावली

दत्त विश्लेषणः–

अभिभावक, जनप्रतिनिधि,संस्था के सदस्य बालक, बालिकओं पर किए गए क्रियात्मक शोध के बाद निम्न विश्लेषण स्पष्ट हुएः–

(1) बालिकाओं द्वारा बताएं कारणों,प्रश्नोत्तर में मुख्य भूमिका निभाई गई लगभग 80 प्रतिशत बालिकाओं ने हिस्सा लिया।

(2) शैक्षणिक वर्ष 2015–16 तक की प्राथमिक स्तर की अल्पसंख्यक बालिकाओं की संख्या में कमी यह दर्शाती हे कि बालिकाएं प्राथमिक के बाद विद्यालय से पलायन कर रही है।

(3) 95 प्रतिशत बालिकाओं की पढ़ने में रूचि है तथा विद्यालय से बालिकाओं को वंचित रखने के लिए अभिभावक जिम्मेदार है।

(4) बालिकाओं द्वारा बताए गए प्रमुख कारणों में घर पर घरेलू कार्यो के कारण अध्ययन से बंचित होना।

(5) 40 प्रतिशत बालिकाओ के विद्यालय छोड़ने का कारण आर्थिक स्थिति का कमजोर होना।

(6) 80 प्रतिशत बालिकाओं कीमाताएं निरक्षर है।

(7) ग्रामीण इलाकों में खेतीबाड़ी व मुरब्बों पर निवास होने के कारण बालिकाओं का पलायन।

(8) अभिभावक, जनप्रतिनिधि एवं संस्था प्रधान बालिका शिक्षा में सुधार की आवश्यकता महसूस करते है।

दत्त विश्लेषण का निष्कर्ष :–

(1) बालिकाओं का विद्यालय से पलायन हो रहा है।

(2) अभिभावक वर्ग का विद्यालय व शिक्षा के प्रति अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिए।

(3) सभी बालिकाएं विद्यालय कीआगे की पंक्ति में बढ़ती है।

(4) अभिभावक, संस्था प्रधान व जनप्रतिनिधि बालिका शिक्षा में सुधार की आवश्यकता महसूस करते है।

(5) पलायन हुई बालिकाओं व अभिभावकों से सम्पर्क नहीं हो पाया ।

(6) घरेलू कार्यो से बालिकाओं को निवृत रखा जाएं

सुझाव :–

क्रियात्मक शोध पश्चात निम्न सुझाव उपयोगी रहेंगे।

(1) प्रतिभाशाली बालिकाओं को परितोषिक व पुरस्कार प्रदार कर अभिप्रेरित करना।

(2) विद्यालय में शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया जाये।

(3) सामाजिक रीति रिवाजों के प्रति आधुनिक जागरूकता बताकर बाल विवाह का विरोध करना।

(4) निकटतम दूरी पर बालिकाओं हेतु विद्यालय स्थापित करना।

(5) अभिभावकों को शिक्षा के फायदे व उपयोगिता बताकर शिक्षा के प्रति प्रेरित करना।

अनुसंधाता

6. धार्मिक अंधविश्वासों को दूर कर धार्मिक पुस्तकों में वर्णित शिक्षा की मेहता बताना।
7. समय समय पर शिक्षा या अन्य क्षेत्रों में अल्पसंख्यक वर्ग की प्रतिभाओं द्वारा व्याख्यान दिलवाना तथा बालिकओं को शिक्षा के प्रति अभिप्रेरित करना।
8. अभिभावकों से समय समय पर सम्पर्क कर बालिकाओं को घरेलू कार्यो व्यावसायिक कार्यो से दूर रहने का सुझाव व शिक्षा पर ध्यान देन की बात कहना।
9. विद्यालय में शैक्षिक गतिविधियों को आयोजन किया जाये।
10. शिक्षा से पलायन करने वाली बालिकाओं व अभिभावकों से समय समय पर संपर्क कर विद्यालय से जोड़ना।
11. विद्यालय में निशुल्क अध्ययन सामग्री व गणवेश प्रदान करना।

शोध की उपयोगिता : उपर्युक्त निष्कर्षो के आधार पर शोध की निम्न उपयोगिता हो सकती है।

1. शोध का विश्लेषण करने के पश्चात अभिभावकों मे जागरूकता का विकास होगा।
2. अभिभावकों में शिक्षा के प्रति सम्मान बढेगा एवं उसकी उपयोगिता से भिज्ञ होगें।
3. अभिभावकों के द्वारा बालिकाओं को घरेलू कार्यो से दूर रखा जाएगा।
4. बालिकाओं का शिक्षा के प्रति रूझान बढेगा है।
5. शोध करने के पश्चात ग्राम ख्याला में अल्पसंख्यक की छात्राओं में विद्यालय के प्रति जागरूकता की भावना जाग्रत होगी शिक्षा के प्रति रूझान बढेगा है।

अनुसंधाता

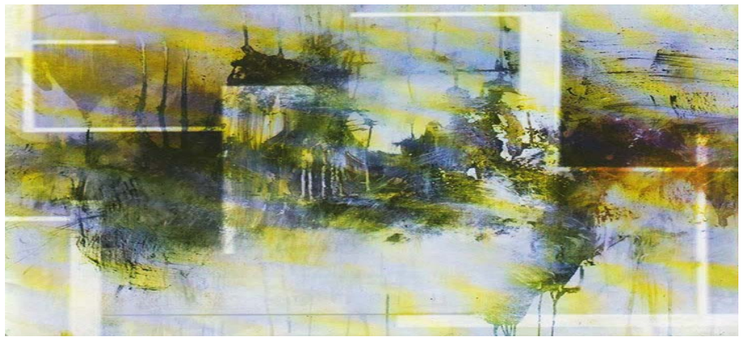

शोध सार

शीर्षक : राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, हमीरा में कक्षा 8 की छात्राओं की गणित विषय में अरूचि।

शोधकर्ता : श्रीमती किस्मत कुमारी
अध्यापिका राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हमीरा, जैसलमेर

औचित्य : छात्राओं में गणित विषय में आ रही समस्याओं का समाधान करना व रूची जागृत करना।

परिकल्पना : छात्रो में उचित शिक्षण विधि का प्रयोग करने से बच्चों में सुधार आयेगा।
छात्रों में गणित के सुत्रों व पहाड़ो को याद कराने से छोटी छोटी समस्याओं का समाधान होगा।
छात्रों को सहायक सामग्री के द्वारा समझाने से गणित विषय के प्रति रूचि उत्पन्न होगी।
छात्रों को प्रयत्न व त्रुटि के द्वारा सुधार कराया जायेगी।

सीमांकन : कक्षा 8 की राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राएं (राजकीय बा.उ..प्रा.वि., हमीरा)

न्यादर्श : कक्षा 8 की 10 छात्राएं

विधि : प्रश्नावली विधि उपचारात्मक शिक्षण, सहायक सामग्री द्वारा, पूर्व परख एवं पश्च परख प्रश्नावली

उपकरण : प्रश्नावली विधि साक्षात्कार विधि

दंत संकलन : प्रस्तुत शोधकार्य के द्वारा दंत संकलन किया जायेगा।

दत विश्लेषण : अभिभावक प्रश्नावली, अध्यापक प्रश्नावली, प्रधानाध्यापक प्रश्नावली व छात्रों के लिए प्रश्नावली के आधार पर दत विश्लेषण किया जायेगा।

दत विश्लेषण की व्याख्या : प्रथम चरण में छात्रों की गणित में अरूचि के कारणों का पता लगाया गया। उसके पश्चात छात्रों को उचित शिक्षण विधि एवं सहायक सामग्री के द्वारा सुधार करवाना बेहतर होगा इससे यह व्याख्या होती है।

1. शत प्रतिशत अभिभावक छात्रों को घर पर पढाई का वातावरण उपलब्ध नहीं करवाते।
2. छात्रों के अभिभावकों का अशिक्षित होना भी उनकी कमजोरी का कारण है।
3. छात्रों का विद्यालय में अनुपस्थित रहना भी गणित में अरूचि का कारण है।
4. छात्रों का घर पर पढ़ाई नहीं करना भी कमजोरी का कारण है।

निष्कर्ष : छात्रों के दत विश्लेषण के आधार पर निम्न सुधार किए जा सकते है।

1. छात्राओं में सहायक सामग्री (पोस्टर, चार्ट गणित किट) आदि का प्रयोग कर उनके शिक्षण कार्य में सुधार करवाया जा सकता है।
2. छात्रों में छोटे छोटे समस्यात्मक प्रशन व समय समय पर सुधार कार्य देने से इस समस्या का निराकरण किया जा सकता है।
3. विद्यालयों में अध्यापक विषय के नहीं है।
4. अभिभावक बच्चों को घर पर सहायता नहीं करते है।
5. अभिभावकों की मीटींग में उपस्थिति कम है।
6. शिक्षण तकनीकों में नयापन नहीं है।
7. विद्यालयों में पूर्ण सहायक सामग्री नहीं है।
8. गणित विषय के प्रति सकारात्मक वातवरण नहीं है।
9. छात्राओं में कम उम्र में विवाह होने के कारण पढाई के प्रति रूझान कम है।तथा घरेलू कार्य में व्यस्तता भी गणित के प्रति रूझान कम है।
10. छात्राओं की विद्यालय में अनियमितता है।

इन सभी के आधार पर छात्रों में सुधार सम्भव हो सकता है।

शोध की उपयोगिता : उपर्युक्त निष्कर्षो के आधार पर शोध की निम्न उपयोगिता संभव होती है।

1. यदि विद्यालय की दूरी कम कर दी जाये तो छात्रों की अनियमितता का हल होगा।
2. शिक्षा कार्यक्रमों को बढ़ाकर अभिभावकों को जागरूक करने से कम उम्र में विवाह की समस्या का समाधान होगा। तथा घर पर बच्चों का पढ़ाई के लिए समय देकर भी गणित की कमजोरियां दूर होगी।
3. नवीनतम शिक्षण तकनीकों का शिक्षण में प्रयोग करना।
4. विद्यालय में गणित किट का अधिकाधिक प्रयोग करने से बच्चों में गणित विषय में आ रही समस्याओं का समाधान हुआ है।
5. अभिभावकों के बच्चों पर ध्यान देने से उनकी शिक्षण में रूचि जागृत हुई है।
6. अध्यापकों के नियमित गृहकार्य देने व समस्यात्मक प्रशन हल करवाने से समस्या का समाधान कम हुआ है।
7. छात्रों को रेखा गणित के चित्र, ग्राफ, कोण पर आधारित सवाल करवाने से छात्रों में रूचि जागृत हुई है।

सुझाव : उपर्युक्त शोध कार्य के बाद निम्न सुझाव दिए जात है।

1. विद्यालयों में अभिभावकों की नियमित मीटींग लेकर बच्चों को घर पर पढ़ाई का उचित वातावरण दिया जाए इसकी व्यवस्था होनी चाहिए।
2. विद्यालयों में विषय अध्यापकों की नियुक्ति की जाए।
3. विद्यालयों में गणित की सहायक सामग्री गणित कीट, उपलब्ध करवाएं जाए।
4. छात्रों के लिएविद्यालय निश्चित दूरी पर होने चाहिए।
5. विद्यालयों में एक कालांश में पहाड़े, सूत्रों को याद करवाना चाहिए।
6. विद्यालयों में गणित विषय की प्रतियोगिता, क्विज आदि का समय समय पर आयोजन होना चाहिए।

सभी उपकरण मेरे पास सुरक्षित है।

शोध सार

1. **शोध का शीर्षक**- रा.उ.प्रा.विद्यालय मोती किलों की ढाणी की
कक्षा 5 व 7 में हिन्दी वर्तनी सुधार सम्बन्धी समस्या।

2. शोधकर्ता- रणवीर पद अध्यापक
विद्यालय-राजकीय उ.प्रा.वि.मोती किलों की ढ़ाणी।

3. शोध की प्रस्तावना- बालक के सर्वांगींण विकास में शिक्षा की महती भूमिका है; विद्यार्थी की शिक्षा का स्तर बालक की आयु एवं कक्षा स्तर के अनुसार होनी चाहिए। स्पष्ट व कुछ उच्चारण के अभाव में लिखित अभिव्यक्ति अपूर्ण है; भाषा का विराम चिन्हों का प्रयोग करते हुए कठिन शब्दों को आखानी से लिख एवं बोल सके जिससे विद्यार्थियों की बुमियाद मजबूत हा सकें।

4. शोध की आवश्यकता- विद्यार्थियों के गृह कार्य जाँच में कठिन शब्दों के लेखन में त्रुटियाँ पायी गई। उन कमियों को दूर करने के लिए अनुसंधान एवं शोध कार्य की आवश्यकता महसूस की गई।

5. शोध के उद्देश्य- (1) विद्यार्थियों में व्याकरण सम्बंधी सुधार करवाना जिससे वे शब्दों का सही उच्चारण कर सकें। उससे कहानी, कविता सृजन में रूचि ले सकेंगे। इससे विद्यार्थियों में शुद्ध भाषा एवं लेखन शैली का विकास हो पाएगा।

6. सीमांकन- रा.उ.प्रा.विद्यालय मोती किलों की ढ़ाणी (खींवसर) प.ं स. जैसलमेर कक्षा-5 विषय हिन्दी सभी छात्र-छात्राएं।

7. न्यादर्श-रा.उ.प्रा. विद्यालय मोती किलों की ढ़ाणी हिन्दी विषय के कक्षा-5 के 7 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

8. शोधे विधि- इस शोध कार्य में वार्तालाप, पाठ्य पुस्तक पाठ्न एवं प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया गया।

9. उपकरण या तकनीक- कक्षा-5 की वर्तनी सुधार सम्बधी शोध कार्य में सर्वेक्षण, प्रश्नावली एवं अनुसूची उपकरणों को प्रयोग में लिया गया।

10. दत्त विशलेषण- अभिभावक, प्रश्नावली, अध्यापक प्रश्नावली, प्रधानाध्यापक प्रश्नावली व छात्रों के लिए प्रश्नावली के आधार पर दत्त विश्लेषण किया जाएगा।

11. दत्त विश्लेषण की व्याख्या-

(1) 80% अभिभावकों ने बताया कि विद्यार्थियों को विद्यालय समय पश्चात् घरेलू कार्य में व्यस्त रखा जाता है।

(2) शत प्रतिशत अभिभावकों ने बताया कि घर पर बोलचाल की भाषा में हिन्दी का प्रयोग नहीं किया जाता है।

(3) 80% विद्यार्थियों ने बताया कि सहपाठियों के साथ मिलकर गृह कार्य करते हैं। व टेलीविजन,खेल इत्यादि कार्यो में सामूहिक भाग लेतें है।

(4) 20% विद्यार्थियों ने बताया कि वे घर पर पुस्तकों का अध्ययन करते है।

(5) शत प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि विद्यार्थी विद्यालय समय में करवाए गए कार्य का घर पर निरन्तर अभ्यास नहीं करते है।

(6) प्र. अध्यापक जी ने बताया कि अधिकांश बच्चें गृह कार्य विद्यालय समय में ही करते है।

(7) अभ्यास कार्य करवाने के उपरान्त भी त्रुटियों में सुधार का प्रतिशत कम है।

12. निष्कर्ष- अभिभावकों, विद्यार्थियों, प्रधानाध्यापक सहित विद्यालय के तीन अध्यापकों से प्राप्त उत्तर प्रतकों के विशलेषण-उपरांत निम्न निष्कर्ष निकाले गए-

(1) अधिकांश अभिभावक निरक्षर होने के कारण वे घर पर विद्यार्थियों की उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का सुधार नहीं करवा पाते है।

(2) अधिकांश विद्यार्थी खेती व पशुचारण में अभिभावकों के साथ चले जाते है इसलिए वे अभ्यास कार्य पर ध्यान नहीं दे पाते है।

(3) विद्यार्थियों को त्रुटियाँ सुधार हेतु बार-बार अभ्यास कार्य करवाने के बावजूद भी अपेक्षित सुधार नहीं कर पाते है।

(4) अभिभावक विद्यार्थियों की समस्या के समाधान हेतु यथासमय शिक्षकों से छात्र रिर्पोट नहीं लेते है।

(5) सुधार कार्य करवाने के बावजूद भी विद्यार्थी कॉपी में दिए गए सुधार को बार-बार नहीं देखते है।

(6) निरन्तर सुधार कार्य करवाए जाने के बाद अपैक्षित सुधार विद्यार्थियों में पाया गया है। अगर लगातार अभ्यास कार्य करवाया जाएगा तो सुधार निश्चित है।

13. उपयोगिता- उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर शोध कार्य की निम्नांकित उपयोगिता संभव होती है-

(1) विद्यार्थियों में शुद्ध उच्चारण एवं लेखन की आदत का विकास होगा।

(2) विद्यार्थी हिन्दी में पाठ्य पुस्तक को स्पष्ट एवं शुद्ध-उच्चारण के साथ पढ़ पाया।

(3) छात्र कविता या कहानी का मौलिक सृजन कर सकेंगे।

(4) लेखन सम्बन्धी एवं वर्तनी कौशल का विकास किया जाएगा।

(5) विद्यार्थियों में भाषा शैली का विकास होने से व्यवहारिक जीवन में अधिक कारगार एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

(6) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में उतरोत्तर वृद्धि परिलक्षित होगा।

14. सुझाव- उपरोक्त शोध कार्य के बाद निम्न सुझाव दिए जा सकते है-

(1) अध्यापक-अभिभावकों की समय-समय पर बैठक बुलाकर पढ़ाई सम्बन्धी चर्चा की जाए।

(2) प्र. अध्यापक द्वारा समय-समय पर विद्यार्थियों के वर्तनी एवं उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों के बारे में चर्चा की जाए ताकि अपेक्षित सुधार हो।

(3) विद्यार्थियों में उच्चारण एवं शुद्ध लेखन पर प्रोत्साहन को बढ़ावा दिया जाए।

(4) व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान को पाठ्य क्रम में अधिक शामिल किया जाए।

(5) अभिभावक घर पर बच्चों को पढ़ने का वातावरण प्रदान करें।

अनुसंधाता

शोध सार

विषय :- रा.प्रा.वि. नभे खां की ढाणी (ऊजलां) पं.सं. सांकड़ा में कक्षा 1 से 5 के विद्यार्थियों में अनियमितता की समस्या का अध्ययन।

:: प्रस्तोता ::

पप्पूराम अध्यापक

1. **शोध ओचित्य-** रा.प्रा.वि.नभे खां की ढाणी (ऊजलां) के विद्यार्थियों की अनियमितता के कारणों का पता लगाना।
2. विद्यार्थियों को नियमित विद्यालय आने के लिए प्रोत्साहित करना।

2. उददेश्यः-

1. विद्यार्थियों को नियमित विद्यालय आने के लिए प्रेरित करना।
2. विद्यार्थियों की उपस्थिति व ठहराव में वृद्धि करना।

3. समस्या के कारणः-

1. विद्यार्थियों की विद्यालय आने में अरूचि।
2. विद्यार्थियों का खेती कार्य व पशुचारण में अपने अभिभावकों के साथ रहना।
3. विद्यार्थियों अपने माता-पिता के साथ आजीविका कार्यो में सहयोग करना।
4. अभिभावकों का शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा होना और आजीविका के कार्यो में व्यस्त रहना।

4. परिकल्पना :-

1. विद्यार्थी नियमित रूप से विद्यालय आगे के लिए प्रेरित हो सकेगे।
2. अभिभावक व विद्यार्थी शिक्षा की महत्व जान सकेगें।
3. नियमित विद्यालय आने से विद्यार्थियों में शिक्षण के प्रति रूचि बढ़ेगी।

5. शोध का परिसीमन

प्रस्तुत लघु शोध जैसलमेर जिले के ब्लॉक सांकड़ा के रा.प्रा.वि. नभे खां की ढाणी (ऊजलां) के विद्यार्थियों अभिभवकों,शिक्षकों व प्रधानाचार्य तक सीमित रखा गया है। किन्तु यह शोध जैसलमेर जिले के बाहर के विद्यालय एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी होगा।

6. न्यादर्श :- रा.प्रा.वि.नभे खां की ढाणी के कक्षा 1 से 5 तक के 57 विद्यार्थी।

7. उपकरण :- प्रस्तुत क्रियात्मक शोध को पूर्न करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर प्रशस्ती किया गया। व साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग किया गया।

8. सांख्यिकी व तकनीक :- शोध हेतु दत्त विश्लेषण कार्य में औसत प्रतिशतता सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त प्रश्नावली व साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ो का संकलन किया गया। संकलन से प्राप्त प्रश्नोत्तर के आधार पर दत्त व्याख्या की गई।

10. विश्लेषण :-

(i) 90 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया कि विद्यार्थियों को घरेलू कार्य में व्यस्त रखा जाता है।
(ii) 80 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया कि वे निरक्षर है अत: पढ़ाई के बारे में नहीं समझते है।
(iii) 80 प्रतिशत अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय समय पर जाने के लिए प्रेरित नहीं करते है।
(iv) 80 प्रतिशत विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रूचि का अभाव है।
(v) प्रधानाध्यापक जी ने बताया कि बच्चें बार-बार प्रेरित करने के बावजूद नियमित नहीं पहूंचते है।
(vi) शिक्षकों ने बताया कि ज्यादातर बच्चें अपने अभिभावकों से साथ पशुचारण करने व खेती कार्य में सहयोग करन के लिए साथ चले जाते है।

11. उपयोगिता :-

1. नियमित शाला आने से बच्चों के शैक्षिक स्तर में सुधार होगा।
2. नियमितता से बच्चों में अनुशासन की भावना जागृत होगी।
3. छात्र हर कार्य को समय पर करने के लिए प्रेरित होगें।
4. छात्र आस-पास के परिवेश में नियमित कार्य करने का वातावरण निर्माण करेंगे।
5. छात्र पौष्टिक भोजन से लाभान्वित होगें।
6. छात्र सरकारी योजनाओं से लाभान्वित होंगें।
7. छात्रों में स्वस्थ प्रतिर्स्पदा की भावना का विकास होगा;
8. छात्रों में स्वच्छता की भावना विकसित होगी।
9. छात्र पर्यावरण के प्रति संवदेनशील होगें।
10. छात्र व अभिभावक शिक्षा के महत्व की उपयोगिता समझ सकेंगें।

12. निष्कर्ष : -

1. छात्र पूर्व की अपेक्षा अधिक नियमित हो रहे है।
2. छात्रों की नियमित उपस्थिति मै इजाफा हो रहा है।
3. छात्रों में अनुशासन की भावना पैदा हो रही है ।
4. छात्रों के शैक्षिक स्तर में सुधार हो रहा है।
5. अभिभावक छात्रों को नियमित शाला भेजने हेतु प्रेरित कर रहे है।
6. छात्रों में स्वच्छता की भावना पैदा हो रही है।
7. छात्र शाला की शैक्षिक व सह शैक्षिक गतिविधियों में रूचि ले रहे है।
8. छात्रों में जिम्मेदारी वहन करने की क्षमता बढ़ रही है।
9. अध्यापकों व छात्रों का मनोबल बढ रहा है।
10. पौष्टिक पोषाहार से अधिक छात्र लाभांवित हो रहे है।

13. सुझाव :-

1. प्रतिदिन अभिभावकों से सम्पर्क कर बालकों को शाला भेजने का आग्रह किया जाए।
2. अभिभावकों को शिक्षा की महत्व बताकर शिक्षा के प्रति जागरूक बनाया जाए।
3. नियमित आने वाले बच्चों को प्रोत्साहित किया जाए।
4. दूरस्थ रहने वाले बालकों के लिए आवागमन की व्यवस्था की जाए।
5. समय-समय पर नियमितता हेतु बैठकों का आयोजन किया जाए।
6. अध्यापकों द्वारा सकारात्मक प्रयास किये जाए।
7. विद्यालय में रोचक गतिविधियां करवाई जाऐ जिससे बालक शाला आने हेतु प्रेरित हो।
8. शाला में पर्याप्त सुविधाएं की जाए।
9. बालकों की नियमितता हेतु रूचिप्रद पुस्तकें वितरण की जाए।
10. छात्रों को शाला में नियमित पौष्टिक पोषाहार व फल वितरण किये जाए।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) जैसलमेर

SIQE विद्यालयों के आधार रेखा मूल्यांकन एवं सत्यापन का विशेलषण– जैसलमेर – 2015–16

श्री बंशीधर पुरोहित
(व्याख्याता)

श्री महेश कुमार बिस्सा
(व.व्याख्याता)

श्री ईश्वरसिंह भाटी
(व्याख्याता)

कक्षा–2 विषय – हिन्दी

(1) कुल 139 में से 131 विद्यालयों में भौतिक सत्यापन कार्य किया गया।कक्षा 2 में कुल नामाकन 2490

(2) भौतिक सत्यापन के दिवस 1148 उपस्थित अर्थात् 46.10प्रतिशत

(3) परीक्षा में प्रविष्ठ 381

(4) 291 विद्यार्थियों का भौतिक सत्यापन सही पाया गया 90 विद्यार्थियों का नहीं
अर्थात् 76.39.7 प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही 23.63 नहीं।

कक्षा 2 विषय– गणित

(1) कुल नामाकन – 2490
उपस्थित – 1148
परीक्षा में प्रविष्ठ – 359

भौतिक सत्यापन सही – 257 नहीं 102

अर्थात् 71.58प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही पाया गया।

विषय –अंग्रेजी

कुल नामाकन – 2490

उपस्थित – 1148

परीक्षा में प्रविष्ठ – 342

भौतिक सत्यापन सही पाया गया–248 नही– 94

अर्थात् 72.52 प्रतिशत सही पाया गया।

कक्षा – 3 विषय– हिन्दी

कुल नांमामन – 2330

उपस्थिति – 1140 (48.92 प्रतिशत)

परीक्षा में प्रविष्ठ – 379

भौतिक सत्यापन सही – 281,नहीं – 98

अर्थात् 74.14 प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही पाया गया 25.89 प्रतिशत नहीं

(2) विषय– गणित

कुल नांमाकन – 2330

उपस्थित – 1140

परीक्षा में प्रविष्ठ – 366

भौतिक सत्यापन सही – 275, नहीं – 91

अर्थात् 75.13 प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही – 24

(3) विषय – अंग्रेजी

कुल नांमाकन – 2330

उपस्थित – 1140

परीक्षा में प्रतिष्ठ – 345

सही – 241

नही – 104

69.85 प्रतिशत सही पाया गया।

कक्षा – 4

(1) विषय – हिन्दी

कुल नामाकन – 2318

उपस्थिति – 1324 (57.11 प्रतिशत)

परीक्षा में प्रविष्ठ – 429

भौतिक सत्यापन सही – 304, नहीं – 125

70.86 प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही पाया गया 29.13 नही।

(2) विषय – गणित

कुल नामांकन – 2318

उपस्थिति – 1324 (57.11 प्रतिशत)

भौतिक सत्यापन सही – 327 , नहीं – 88

78.79 प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही व 21.21 प्रतिशत नही पाया गया।

(3) विषय – अंग्रेजी

कुल नामांकन – 2318

उपस्थित – 1324 (57.11 प्रतिशत)

परीक्षा में प्रविष्ठ 385

भौतिक सत्यापन सही – 256, नहीं – 129

66.49 प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही पाया गया 33.5 प्रतिशत नही।

कक्षा – 5

(1) विषय – हिन्दी

कुल नामांकन – 2784

उपस्थित – 1605 (57.65 प्रतिशत)

परीक्षा में प्रविष्ठ – 478

भौतिक सत्यापन सही – 316, नहीं – 162

66.10 प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही व 33.90 प्रतिशत नहीं पाया गया।

(2) विषय – गणित

कुल नामांकन – 2784

उपस्थित – 1605 (57.65 प्रतिशत)

परीक्षा में प्रविष्ठ – 454

भौतिक सत्यापन सही – 346, नहीं – 100

76.21 प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही व 23.79 प्रतिशत नहीं पाया गया।

(3) विषय – अंग्रेजी

कुल नामांकन – 2784

उपस्थित – 1605(57.65 प्रतिशत)

परीक्षा में प्रविष्ठ – 443

भौतिक सत्यापन सही – 278,नहीं – 165

62.75 प्रतिशत भौतिक सत्यापन सही व 37.25 प्रतिशत नहीं पाया गया।

अनुसंधाता

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) जैसलमेर

SIQE विद्यालयों के आधार रेखा मूल्यांकन एवं सत्यापन का सारणी नयन विशलेषण– जैसलमेर –2015–16

क्र.सं.	कक्षा	विषय	भौतिक सत्यापन एक नजर प्रतिशत में	
			सही	गलत
1	2	हिन्दी गणित अग्रेंजी	76.39 71.58 72.52	23.61 28.42 27.48
2	3	हिन्दी गणित अग्रेंजी	74.14 75.13 69.85	25.86 24.87 30.15
3	4	हिन्दी गणित अग्रेंजी	70.86 78.79 66.49	29.14 21.21 31.51
4	5	हिन्दी गणित अग्रेंजी	66.10 76.21 62.75	33.90 23.79 36.25

निष्कर्ष :– जिले के 139 माध्यमिक उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से 131 विद्यालयों में विद्यार्थी शिक्षकों द्वारा भौतिक सत्यापन किया गया बेस लाईन जांच के आधार पर ये पाया गया कि लगभग 25 से 28 प्रतिशत सर्वे में त्रुटिया है जिसे विद्यार्थी शिक्षकों द्वारा विद्यालय में अपनी उपस्थिति में दुरस्त कराया गया । भविष्य में त्रुटिया न हो इस हेतु समस्त संबंधित पक्षों का सचेत रहना आवश्यक है।

अनुसंधाता

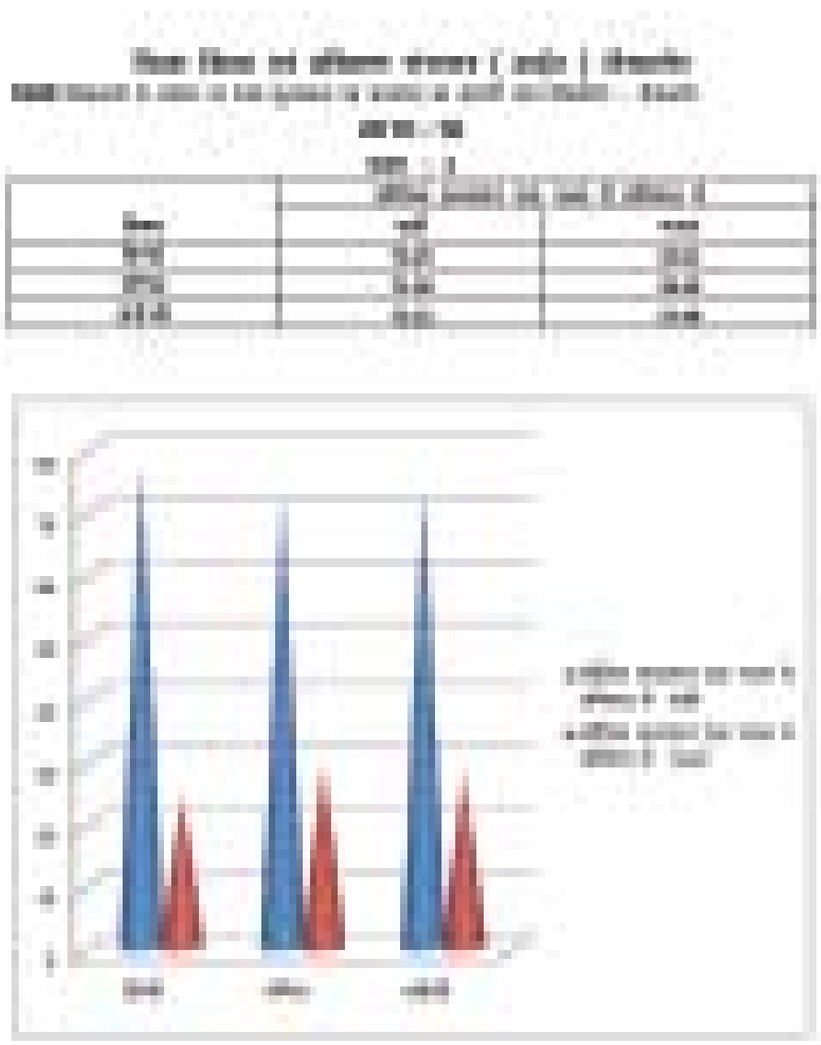

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) जैसलमेर

[illegible]

2015 - 16

[illegible] - 8

	[illegible]	
विषय	[illegible]	[illegible]
हिन्दी	[illegible]	[illegible]
गणित	[illegible]	[illegible]
अंग्रेजी	[illegible]	[illegible]

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) जैसलमेर

[illegible]

2015-16

कक्षा – 4

विषय	[illegible]	
	[illegible]	[illegible]
हिन्दी	[illegible]	[illegible]
गणित	[illegible]	[illegible]
अंग्रेजी	[illegible]	[illegible]

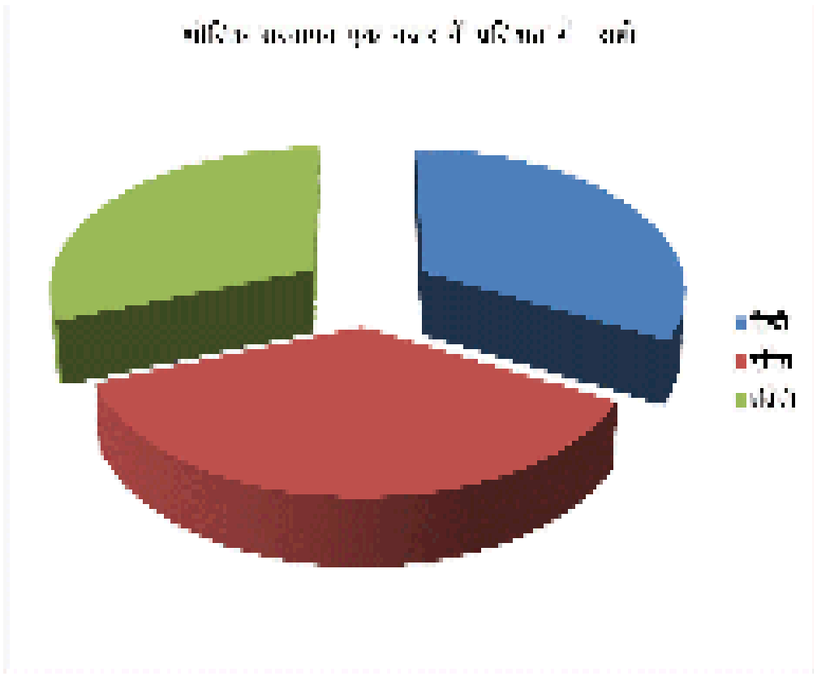

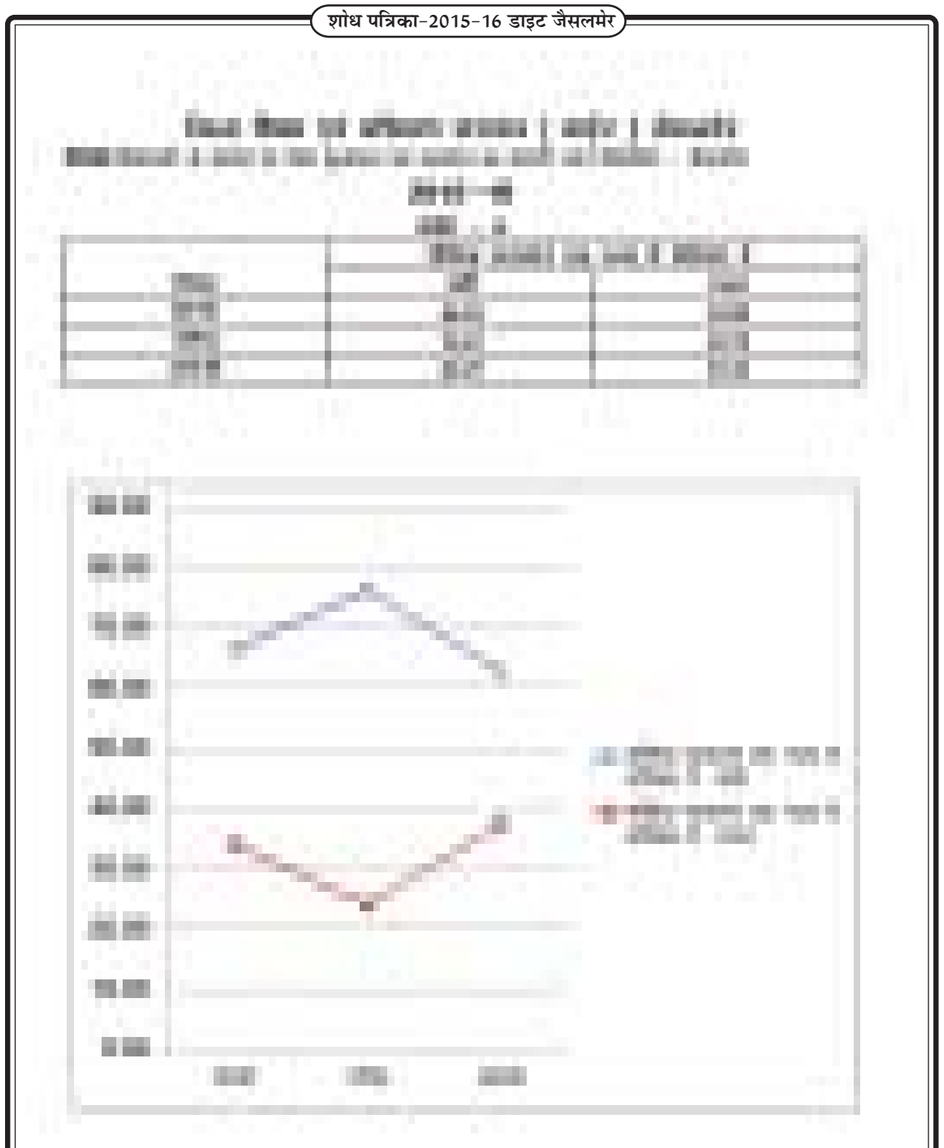

डर्फ-के दोहे (सकंलन)

श्रीमती श्यामा आचार्य
व्याख्याता एवं प्रभागाध्यक्ष
WE

जिसके मन में कल्पना,करती सदा विकास।
शोध सदा करते वही,हो जिनमें कुछ खास।। 1 ।।
करें समस्या की प्रथम,चिन्तन से पहचान।
चलें नियोजित मार्ग पर,करने श्रेष्ठ निदान।।2 ।।
करके तब परिकल्पना,प्रगट करें औचित्य।
ढूंढ़े उसके स्रोत तब, पढ़ संदर्भ साहित्य।। 3 ।।
परिसीमन कर क्षेत्र का,लख निज साधन अल्प।
न्यादर्शो का चयन कर,पूर्ण करें आकल्प।। 4 ।।
बहुत खास है उपकरण,दत संकलन प्राण।
जिनके ही आधार पर,मिले शोध को त्राण ।। 5 ।।
दत संकलन का करें,विश्लेषण निष्पक्ष।
देते सी सुझाव वे, होते है जो दक्ष ।। 6 ।।
करें अमल निष्कर्ष पर,मिटे सभी अवरोध।
वैज्ञानिक विधि से करें, मिलकर सारे शोध ।। 7 ।।

(डॉ. कैलाश मण्डेला)